दैनिक

भीम प्रज्ञा

PRGI No. RJHIN/25/A3844 डाक पंजीयन G/JJN/053/2024-26 Valid up to 31 dec. 2026

2009 से स्थापित

सम्यक, न्याय, स्वतंत्रता, समानता, बंधुता, एवं सामाजिक चेतना के लिए रचनात्मक पत्रकारिता

www.bheempragya.in | वर्ष-1 | अंक-54 | झुंझुनू (राजस्थान) | मंगलवार, 13 जनवरी, 2026 | Email.bheempragya@gmail.com | पृष्ठ-8 | मूल्य: 5.00

भीम प्रज्ञा अलर्ट

जो व्यक्ति दूसरों को आगे बढ़ते देख मुस्कुरा सकता है, वही वास्तव में अंदर से समृद्ध और बड़ा होता है।

गांव के गुवाड़ से निकलकर प्रकाशित होने वाले दैनिक अखबार भीम प्रज्ञा की मजबूती के लिए पाठक बनिए और बनाइए अपनी प्रतिक्रिया दीजिए

हेल्पलाइन - 9983040937

Bheem Pragya publication
A/C No: 61347330768
IFSC Code- SBIN0031880
Phone pe , G-pay
9983040937

सम्पादकीय

एडवोकेट हरेश पंवार

Contact No. 9983040937

मैं बोलूंगा तो फिर कहोगे कि बोलता है

बड़प्पन का सही अर्थ : सम्मान, स्नेह और संस्कार का संतुलन

समाज में 'बड़ा' शब्द का प्रयोग अक्सर उम्र, पद, धन या अधिकार के संदर्भ में किया जाता है, लेकिन वास्तविक बड़प्पन इन बाहरी पहचानों से कहीं आगे होता है। सच तो यह है कि बड़ा वही है जो बड़ों का सम्मान करे और छोटों को भी प्यार दे। यही कथन व्यक्ति के चरित्र, संस्कार और उसकी सच्ची परिपक्वता का दर्पण है। यह विचार केवल नैतिक उपदेश नहीं, बल्कि सामाजिक संतुलन और मानवीय मूल्यों की नींव है। यहां मैं बोलूंगा तो फिर कहोगे कि बोलता है।

भारतीय संस्कृति में बड़ों का सम्मान सदियों से जीवन का अनिवार्य हिस्सा रहा है। माता-पिता, गुरुजन, बुजुर्ग–इनसे प्राप्त अनुभव और मार्गदर्शन ही व्यक्ति को जीवन की कठिन राहों में सही दिशा दिखाता है। बड़ों का सम्मान करना दरअसल उनके अनुभवों का सम्मान करना है, उनके संघर्षों और त्याग को स्वीकार करना है। जिस समाज में बुजुर्गों को बोझ समझा जाने लगता है, वहां नैतिक पतन की शुरुआत हो जाती है। बड़ों के प्रति आदर केवल शिष्टाचार नहीं, बल्कि ज्ञान की निरंतरता का माध्यम है, जिससे पीढ़ियों के बीच संवाद बना रहता है। लेकिन बड़प्पन का दूसरा और उतना ही महत्वपूर्ण पक्ष है–छोटों के प्रति प्यार, स्नेह और सम्मान। छोटों को केवल आदेश देने या नियंत्रित करने का भाव यदि किसी व्यक्ति में है, तो वह अधिकार तो जता सकता है, पर महान नहीं बन सकता। छोटों के प्रति स्नेह दिखाना, उन्हें समझना, उनकी गलतियों को धैर्य से सुधारना और उन्हें आगे बढ़ने के अवसर देना ही सच्चे बड़प्पन की पहचान है। जिस व्यक्ति के व्यवहार में करुणा और संवेदनशीलता होती है, वही समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकता है।

आज के समय में, जब प्रतिस्पर्धा और अहंकार ने मानवीय रिश्तों को कमजोर कर दिया है, इस विचार की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। अक्सर देखा जाता है कि पद या शक्ति मिलते ही व्यक्ति अपने से छोटे लोगों को तुच्छ समझने लगता है। कार्यालयों में वरिष्ठ और कनिष्ठ के बीच बढ़ती दूरी, परिवारों में पीढ़ियों का टकराव और समाज में संवाद की कमी–ये सभी इसी मानसिकता का परिणाम हैं। यदि बड़े अपने बड़प्पन को व्यवहार में उतारें और छोटे भी सम्मान के साथ आगे बढ़ें, तो यह खाई स्वतः कम हो सकती है। यह विचार समाज में सद्भाव और एकता को भी मजबूत करता है। जब बड़ों को सम्मान मिलता है, तो वे स्वयं को उपयोगी और सुरक्षित महसूस करते हैं। जब छोटों को प्यार और मार्गदर्शन मिलता है, तो उनमें आत्मविश्वास और जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है। यही संतुलन एक स्वस्थ समाज की पहचान है, जहां अनुभव और ऊर्जा दोनों मिलकर प्रगति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। बड़ों का अनुभव और छोटों का उत्साह–यदि दोनों में सामंजस्य हो जाए–तो समाज के सामने कोई भी चुनौती बड़ी नहीं रह जाती।

शिक्षा और संस्कारों की भूमिका यहां अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। परिवार, विद्यालय और समाज–तीनों का दायित्व है कि बच्चों में यह समझ विकसित करें कि सम्मान केवल उम्र देखकर नहीं, बल्कि व्यवहार से अर्जित किया जाता है। बच्चों को यह सिखाना जरूरी है कि बड़ों का सम्मान करना कमजोरी नहीं, बल्कि परिपक्वता का प्रतीक है। साथ ही, बड़ों को भी यह सीखने की आवश्यकता है कि छोटों की बात सुनना, उनके विचारों को महत्व देना और उन्हें आगे बढ़ने का अवसर देना उनके कद को और ऊंचा करता है। इतिहास और समाज दोनों गवाह हैं कि वही व्यक्ति महान कहलाए हैं, जिनके आचरण में विनम्रता और करुणा रही है। चाहे वे राजा हों, संत हों या सामान्य नागरिक–उनका बड़प्पन उनके व्यवहार से पहचाना गया, न कि केवल उनके पद से। वास्तव में, जो व्यक्ति जितना बड़ा होता है, उसका व्यवहार उतना ही सरल और स्नेहपूर्ण होना चाहिए। यही सच्ची महानता है।

अंततः यह स्पष्ट है कि बड़प्पन का असली अर्थ उम्र, पद या अधिकार से नहीं, बल्कि सम्मान और प्रेम के संतुलन से तय होता है। बड़ा वही है, जो अपने बड़ों का आदर करे, उनके अनुभवों से सीखे और साथ ही छोटों को स्नेह, मार्गदर्शन और सम्मान दे। यही मानवीय मूल्यों की आत्मा है और यही हमारी संस्कृति की सच्ची पहचान। यदि हम इस विचार को केवल शब्दों तक सीमित न रखकर अपने व्यवहार में उतार लें, तो न केवल व्यक्ति, बल्कि पूरा समाज अधिक संतुलित, संवेदनशील और सशक्त बन सकता है।

सड़क पर मुर्गा बने सरकारी कर्मचारी, रैली में नाचे

सरकार से नाराज कर्मचारियों का प्रदर्शन, जयपुर में जगह-जगह लगा जाम

भीम प्रज्ञा न्यूज

जयपुर। जयपुर में सोमवार को अपनी मांगों को लेकर कर्मचारियों ने प्रदर्शन किया। इस दौरान कुछ कर्मचारी मुर्गा बन गए तो कुछ नाचते हुए रैली में चले। अल्बर्ट हॉल से शुरू हुई रैली सिविल लाइंस की ओर जा रही थी। रैली के चलते रामबाग सर्किल से अजमेरी गेट तक और स्टैच्यू सर्किल से राजमंदिर जाने वाले रास्ते पर जाम लग गया था। प्रदर्शन अखिल राजस्थान राज्य कर्मचारी संयुक्त महासभा के बैनर तले किया जा रहा था। संगठन के प्रदेशाध्यक्ष महावीर शर्मा ने बताया- सरकार 2 साल से बात नहीं कर रही है। बजट घोषणा को लेकर हर तबके से सुझाव लिए जा रहा है, लेकिन कर्मचारियों को सुनने के लिए सरकार के पास सिर्फ 40 सेकंड है।

कर्मचारी नेता बोले- सरकार नहीं मानी तो बड़ा आंदोलन करेंगे

अखिल राजस्थान राज्य कर्मचारी महासंघ की रैली 22 गोदाम स्थित धरना स्थल पर आकर खत्म हुई। यहां संगठन से जुड़े कर्मचारी नेताओं ने संबोधित करते हुए सरकार पर 2 साल तक अनदेखी का आरोप लगाया। उन्होंने कहा- सरकार बजट घोषणाओं में कर्मचारियों को 40 सेकंड देती है। एसी में बैठने वाले अधिकारी मौज करते हैं, जबकि धरातल पर काम यही कर्मचारी करते हैं। फिर भी कर्मचारियों की 11 सूत्री मांगों को लेकर मौजूदा सरकार ने अब तक कोई रुख साफ नहीं किया है। उन्होंने साफ किया कि हमारे लिए एक शुरुआत थी। सरकार यदि उनकी मांगों को पूरा नहीं करती तो जल्द ही प्रदेश स्तर पर एक बड़ा आंदोलन छेड़ा जाएगा।

6 महीने से सैलरी नहीं मिल रही

सवाई माधोपुर निवासी शिवकुमार अग्रवाल ने कहा कि मैं मनरेगा में संविदा पर काम करता हूं और हमारी सरकार से मांग है कि हमें नियमित किया जाए। उन्होंने आरोप लगाया कि सचिवालय में जो अधिकारी बैठे हैं, वह समय पर अपनी सैलरी उठा रहे हैं और हमें 6 महीने से सैलरी नहीं मिल रही है।

राजस्थानी गीत गए

प्रदर्शन के दौरान कर्मचारियों का अनोखा अंदाज दिखा। अपनी मांगों को लेकर राजस्थानी गीत गाते हुए अपनी बात रखी।

पुलिस ने रूट बदला तो सड़क पर बैठे कर्मचारी

कर्मचारियों की रैली को भाजपा ऑफिस की ओर से जाने की अनुमति नहीं दी गई। पुलिस ने सभी को चौमूं हाउस सर्किल की तरफ डायवर्ट कर दिया। 22 गोदाम तक जाना का रास्ता दिया गया।

रूट बदलने से नाराज कुछ कर्मचारी चौमूं हाउस सर्किल पर बैठकर विरोध जताने लगे।

ट्रैफिक को निकालने के लिए पुलिस कर रही मशक्कत

कर्मचारियों की रैली के दौरान ट्रैफिक मैनेजमेंट पुलिस के लिए चुनौती बन गया। कर्मचारी सड़क के दोनों और चल रहे हैं। ट्रैफिक को एक साइड से निकलने के लिए पुलिस को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

रैली में जमकर नारेबाजी की गई

अखिल राजस्थान संयुक्त राज्य कर्मचारी महासंघ की रैली अहिंसा सर्किल पहुंची। यहां अशोक मार्ग पर जामकर नारेबाजी की गई।

नाचते हुए आगे बढ़े टीचर

जालोर में टीचर भंवरलाल बिश्नोई प्रदर्शन के दौरान नाच कर अनोखे अंदाज में विरोध जताते नजर आए।

पीएम श्री स्कूल बुहाना में 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' क्लब के तहत राष्ट्रीय युवा दिवस मनाया गया

भीम प्रज्ञा न्यूज़ बुहाना।

पीएम श्री चमेली देवी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम), बुहाना में 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' क्लब के तत्वावधान में राष्ट्रीय युवा दिवस हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधानाचार्य बलवान सिंह ने की। उन्होंने स्वामी विवेकानंद के विचारों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि युवाओं को उनके आदर्शों को आत्मसात कर राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने असमिया, हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी एवं बंगाली भाषाओं में अपने विचार प्रस्तुत कर भाषाई एकता और सांस्कृतिक समन्वय का संदेश दिया। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का नेतृत्व सरिता ने किया, जिन्हें उपस्थितजनों ने सराहा। विभिन्न गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभावान विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान कर प्रोत्साहित किया गया। इस अवसर पर राजेश, संजीत, सत्यपाल, देशराज मान एवं मंजू ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में विद्यालय के समस्त स्टाफ एवं विद्यार्थियों का सहयोग सराहनीय रहा।

स्नातक प्रथम सेमेस्टर परीक्षाओं का समय बदलने की मांग, एसएफआई ने कॉलेज गेट बंद कर किया धरना

भीम प्रज्ञा न्यूज़.खेतड़ी।

स्नातक प्रथम सेमेस्टर की मुख्य परीक्षाओं का समय सुबह 8 बजे से बदलकर 10 बजे करने की मांग को लेकर सोमवार को छात्र संगठन एसएफआई ने राजकीय महाविद्यालय खेतड़ी में जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। एसएफआई कार्यकर्ताओं ने कॉलेज के मुख्य गेट को बंद कर धरना दिया और शेखावाटी विश्वविद्यालय प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी की। एसएफआई का कहना है कि शेखावाटी विश्वविद्यालय द्वारा हाल ही में जारी की गई स्नातक प्रथम सेमेस्टर की समय सारणी में प्रथम पारी सुबह 8 बजे रखी गई है, जो छात्र हितों के प्रतिकूल है। संगठन का आरोप है कि भीषण सर्दी के मौसम में ग्रामीण परिवेश से आने वाले विद्यार्थियों के लिए इतनी सुबह परीक्षा केंद्रों तक पहुंचना कठिन होगा, जिससे बड़ी संख्या में छात्र प्रभावित होंगे। धरना प्रदर्शन के दौरान एसएफआई एवं विद्यार्थियों ने कॉलेज प्राचार्य महिपाल कुमावत को ज्ञापन सौंपकर परीक्षा समय में बदलाव की मांग की। ज्ञापन में स्पष्ट रूप से कहा गया कि स्नातक प्रथम सेमेस्टर की मुख्य परीक्षाएं सुबह 8 बजे की बजाय 10 बजे से करवाई जाएं।एसएफआई नीमकाथाना जिला अध्यक्ष विष्णु कुमार नायक ने चेतावनी दी कि यदि विश्वविद्यालय प्रशासन ने परीक्षा समय में बदलाव नहीं किया तो समस्त विद्यार्थी परीक्षाओं का बहिष्कार करेंगे और एसएफआई का धरना अनिश्चितकाल तक जारी रहेगा। इस दौरान जिला अध्यक्ष विष्णु कुमार नायक, पूर्व छात्रसंघ सचिव दिनेश बबेरवाल, छात्र नेत्री पायल नायक, जिला उपाध्यक्ष संजय कुमार सैनी, छात्र नेत्री सीमा सैनी, छात्र नेता रिहान कूरैशी, कॉलेज कमेटी महासचिव दीपांशु वैष्णव सहित इशिका प्रजापति, लक्ष्मी शेखावत, पिंकु गुर्जर, विणु, वर्षा निर्माण, प्रीति जांगिड़, राहुल नायक, प्रदीप नायक, दीपक कटारिया, मीनाक्षी सैनी, रुखसार, खुशी, मुस्कान समेत सैकड़ों विद्यार्थी मौजूद रहे।

स्वामी विवेकानंद जयंती पर राष्ट्रीय युवा दिवस का आयोजन

स्काउट एंड गाइड जिला मुख्यालय झुंझुनूं में हुआ प्रेरक कार्यक्रम

भीम प्रज्ञा न्यूज़.झुंझुनूं।

सोमवार को हिंदुस्तान स्काउट एंड गाइड राजस्थान राज्य के जिला मुख्यालय झुंझुनूं में स्वामी विवेकानंद की जयंती को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारंभिक) संतोष सोहु ने युवाओं से स्वामी विवेकानंद के विचारों और आदर्शों को अपने जीवन में अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि विवेकानंद के विचार आज भी युवाओं के लिए मार्गदर्शक हैं। कार्यक्रम में एडीओ जयपाल सिंह ने युवाओं को वेदांत दर्शन और योग को दैनिक जीवन में उतारने का संदेश दिया। वहीं डीईओ स्काउट प्रदीप कुमार ईशरवाल ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि युवाओं को राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। इस अवसर पर रामस्वरूप, नरपत, धर्मेंद्र सिंह, प्रमोद कुमारी, रीटा सैनी, प्रमोद महला, ब्लॉक प्रभारी आशीष गुडेसर सहित अनेक स्काउट-गाइड पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहें।

मंडावा की गलियों में पहुंची बारवाड़ा पुलिस थाने की इंस्पेक्टर दुर्गा, फिल्म घूंघट के लिए तापसी ने खाकी में दौड़ाई बुलेट

भीम प्रज्ञा न्यूज़.मंडावा।

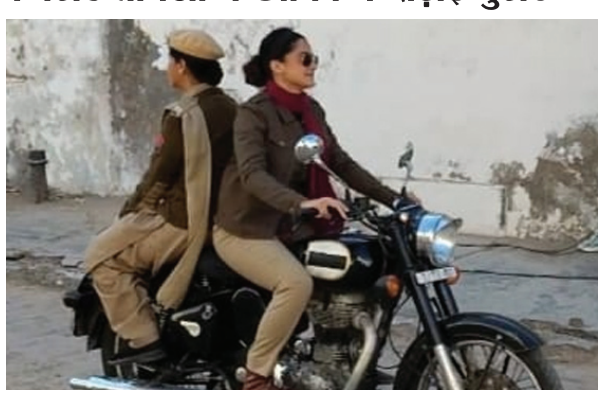

पवन कुमार शर्मा । फिल्म अभिनेत्री तापसी पन्नू का दमदार फिल्म घूंघट में किरदार देखने को मिला। रविवार को दोपहर बाद फिल्म अभिनेत्री तापसी पन्नू ने मंडावा की गलियों में बुलेट से गस्त करते हुए सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। यह हकीकत में नहीं बल्कि फिल्म घूंघट के फिल्माकन को लेकर केमरे में दृश्य कैद किए गए। इस फिल्म में तापसी पन्नू पुलिस थाना बारवाड़ा की इंस्पेक्टर दुर्गा का किरदार निभा रही है। फिल्म के डायरेक्टर अनुपम सिन्हा व मकबूल खान के निर्देशन में कस्बे के झुंनझुंनवाला हवेली से किशोर भवन होते हुए सर्राफा हवेली तक मुख्य मार्ग पर फिल्म के दृश्य शूट किए गए। इस दौरान तापसी पन्नू बुलेट पर खाकी वर्दी पहने हुए और आंखों पर काला चश्मा लगाए हुए मार्ग से गुजरती है। एक तरफ दुकाने लगी हुई है कुछ लोग पैदल आ जा रहे हैं तापसी पन्नू बुलेट से गुजरती है तो रास्ते में एक पुलिस की वर्दी पहने हुए महिला कलाकार साक्षी दिवाकर खड़ी मिलती है उसको बोलती है क्या कुछ चल रहा है आओ बुलेट पर बैठो। साक्षी बुलेट पर बैठ जाती है पीछे की ओर मुंह करके और रास्ते पर दोनों तरफ देखते हुए निकल जाती है। उक्त दृश्य की एक्शन, कट, ओके के साथ करीब 2 घंटे तक शूटिंग चलती है। अभिनेत्री तापसी पन्नू अपनी आने वाली फिल्म 'घूंघट' की मंडावा में शूटिंग कर रही है। तापसी पन्नू की मौजूदगी से स्थानीय लोगों और प्रशंसकों में खासा उत्साह देखने को मिल रहा है। फिल्म 'घूंघट' में तापसी पन्नू पुलिस थाना बारवाड़ा की इंस्पेक्टर की भूमिका निभा रही हैं, खाकी वर्दी में उनका सख्त, आत्मविश्वासी और दमदार अंदाज शूटिंग के दौरान सभी का ध्यान खींच रहा है। उनके इस नए अवतार को देखने के लिए लोग की शूटिंग की जगह पर भीड़ उमड़ रही है। एक्शन और गंभीर रोल में तापसी का यह किरदार फिल्म का प्रमुख आकर्षण माना जा रहा है।

ग्राम पंचायत खुडियां के ग्राम हरिपुरा में विधायक काला द्वारा स्वीकृत बोरिंग का शुभारंभ

भीम प्रज्ञा न्यूज़.पिलानी।

ग्राम पंचायत खुडिया के ग्राम हरिपुरा में पिलानी विधायक पितराम सिंह काला द्वारा विधायक कोटे से स्वीकृत नये नलकूप का शुभारंभ शुभ मुहूर्त में पूजा अर्चना कर किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पिलानी विधायक पितराम सिंह काला थे। विशिष्ट अतिथि पूर्व प्रधान निहाल सिंह रणवा, अरविंद बाडेटिया थे। विधायक काला ने अपने उदबोधन में कहा कि क्षेत्र में पानी की किसी प्रकार की कमी नहीं रहने दी जाएगी । जल्द ही कुंभाराम लिफ्ट कैनाल का का पानी विधानसभा क्षेत्र को मुहैया कराया जाएगा जिसके लिए हमें आंदोलन करना पड़े तो करेंगे। विधानसभा में इस मुद्दे को मैं मजबूती से उठाऊंगा। क्षेत्र में विकास की किसी प्रकार की भी कमी नहीं रहने दी जाएगी। गांव में पानी की कमी का समाधान होने पर ग्रामीणों में हर्ष का माहौल है। इस अवसर पर ग्रामीणों द्वारा विधायक काला का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में मूलचंद सैनी , सरदारा राम सैनी, रमेश डूडी, राम सिंह सैनी, अरुण, विजेश मेघवाल, भागीरथ डूडी, बलवीर मेघवाल, सुमित मीणा एवं अनेक गणमान्य ग्रामीण जन उपस्थित थे।

कितने तरह की स्केटिंग

रोलर स्केटिंग, आइस स्केटिंग, इन लेन स्केटिंग। रोलर स्केटिंग का भारत में बहुत चलन है। इसे सीखना आसान है।

स्केटिंग करो फिट रहो

स्केटिंग उतनी ही आसान और सुरक्षित है जितना कि दूसरे गेम खेलना, जैसे साइकिल चलाना, बास्केटबॉल या अन्य गेम खेलना। आजकल बहुत से स्कूलों में स्केटिंग सिखाई जाती है। स्केटिंग केवल मनोरंजन का ही साधन नहीं है, बल्कि तुम इसे अपना कॅरियर भी बना सकते हो। स्केटिंग के भारत में बहुत से प्रक्षिशण केंद्र हैं, जो बच्चों को चुनकर उन्हें दूसरे देशों में चैम्पियनशिप के लिए भेजते हैं। लेकिन ये सब बातें करने से पहले यह जानो कि स्केटिंग के क्या फायदे हैं –

स्केटिंग एक ऐसी व्यायाम की मशीन है, जिसको करने से तुमको मजा भी आता है और चुस्त और स्वस्थ रहते हो। पैरों की ताकत बढ़ती है। शरीर की सभी मसल्स की एक्सरसाइज हो जाती है। रीढ़ की हड्डी भी सही रहती है।

हाथों और पैरों का सामंजस्य बनाए रखने में मदद मिलती है। दिमाग और समझने की क्षमता बढ़ती है। चौकन्ना रहकर सीखते हो।

स्केटिंग करना भागना और साइकिल चलाने से अधिक फायदेमंद है। तुमको सब बच्चों से मिलने का और बात करने का मौका मिलता है और नई जानकारी मिलती है।

शंख मछली पर निर्भर विशालकाय वालरस

उत्तरी गोलार्द्ध में पाया जाने वाला तथा उथले पानी में रहने वाला 'वालरस' एक विशालकाय जानवर है जिसकी लंबाई करीब 13 फुट तथा वजन करीब 2 टन होता है। इनके टस्क (खांग) की लंबाई करीब 3 फुट होती है। वालरस इन टस्क का प्रयोग प्राय : बर्फ को खोदने के लिए करते हैं, ताकि ये अपने शरीर को पानी से बाहर निकाल सकें। मादा वालरस करीब सवा साल के गर्भाधान के बाद एक शिशु को जन्म देती है और करीब 3 साल तक उसकी देखभाल करती है। वालरस भोजन के लिए प्राय : शंख मछली पर ही निर्भर रहते हैं। वालरस के लंबे टस्क प्राप्त करने के लिए शिकारी इनका बड़ी तादाद में शिकार करते हैं, जो काफी महंगे बिकते हैं। वैसे वालरस का शिकार इसके मांस, इसके शरीर से प्राप्त चमड़े तथा तेल के लिए भी किया जाता है। यही कारण है कि वालरस नामक यह विशालकाय जानवर भी अब लुप्त होते प्राणियों की श्रेणी में शुमार है।

वृहस्पति का नया चंद्रमा !

दोस्तों, तुम्हें तो पता ही होगा कि वृहस्पति के पास सबसे अधिक उपग्रह हैं। अब ताजा खबर यह है कि वैज्ञानिकों ने इसका एक और नया उपग्रह खोज निकालने का दावा किया है। इसे वृहस्पति का 17वां उपग्रह माना जा रहा है। दरअसल, पिछले साल अरीजोना यूनिवर्सिटी और मैसाचुसेट्स के वैज्ञानिकों ने वृहस्पति के चारों ओर एक आकृति को चक्कर काटते देखा था। फिर स्पेसवॉच कार्यक्रम के तहत धूमकेतुओं और क्षुद्रग्रहों को स्कैन कर दिया गया। जब उन्होंने इस नए उपग्रह को देखा तो उन्हें लगा कि यह या तो कोई क्षुद्रग्रह है या कोई धूमकेतु।

(क्षुद्रग्रह बर्फ और धुएं का छोटा सा हिस्सा होता है और सूर्य के चारों तरफ घूमता रहता है। जब यह सूर्य के पास पहुंचता है तो यह धूमकेतु वाष्पीकृत होकर सिर और पूंछ में तब्दील हो जाता है। सौर मंडल में क्षुद्रग्रह मंगल और बृहस्पति के बीच बड़े पैमाने पर पाए जाते हैं।)

वैज्ञानिकों ने इस बात पर विचार किया कि जो यह नई चीज दिखाई दे रही है, वह अगर क्षुद्रग्रह और धूमकेतु नहीं है तो आखिर क्या है? वैज्ञानिक इस बात को लेकर बड़ी उलझन में थे। वे सोच रहे थे कि हमने जो पिछले महीने ऑर्बिट में देखा था, वह आखिर क्या था? (सौर मंडल में ऑर्बिट एक ऐसा रास्ता है, जिसमें एक वस्तु दूसरी वस्तु के चारों ओर घूमती है। ऑर्बिट में हर चीज अपने आप में खास होती है।) वैज्ञानिकों ने पाया कि वृहस्पति ग्रह के चारों ओर घूमने वाला यह नया उपग्रह है, जो पहले नहीं देखा जा सका था। यही वजह है कि वैज्ञानिकों ने इस उपग्रह के लिए कोई खास नाम नहीं रखा है। फिलहाल इसे एस/1999 जे नाम से पुकारा जा रहा है।

नए पाए गए उपग्रह का व्यास 5 किमी है। इसका मतलब यह है कि इस उपग्रह के एक छोर से दूसरे छोर तक पैदल चलने में केवल 5 किमी का सफर करना होगा। इस तरह देखा जाए तो यह वृहस्पति ग्रह का सबसे छोटा उपग्रह है। केवल वृहस्पति का ही नहीं, बल्कि इस सौर मंडल का यह सबसे छोटा उपग्रह होगा। इस उपग्रह के पाए जाने से पहले वृहस्पति का जो सबसे छोटा उपग्रह था, उसका नाम लेडा था। लेडा का व्यास 8 से 16 किमी तक था। अगर तुम ध्यान से देखोगे तो यह देखोगे कि इससे पहले भी वृहस्पति के उपग्रहों में हलचल दिखाई दी है। कुछ दिनों पहले वृहस्पति का सबसे बड़ा उपग्रह भी खोजा गया था। सबसे बड़े उपग्रह ने बहुत हलचल मचाई। यह उपग्रह हमारे सौर मंडल में पाया जाने वाला अकेला उपग्रह है, जहां धरती की तुलना में ज्वालामुखी गुण कहीं ज्यादा पाए जाते हैं। हम सभी यह जानते हैं कि यह वृहस्पति का आखिरी उपग्रह नहीं है। यह उपग्रह अपने अंदर बहुत से रहस्य समेटे हुए है, जो वक्त के साथ खोजने पर सामने आएंगे।

हमारा चांद सबसे अनूठा

हमारे पास यानी पृथ्वी के पास एक ही चांद है, जिसे हम चंदा मामा कहते हैं। अपने सौरमंडल का सबसे चमकीला है अपना चंद्रमा। तुम्हें तो मालूम ही है कि हमारे और सूर्य के बीच में दो और ग्रह हैं। सूर्य के सबसे करीब बुध है और दूसरे स्थान पर शुक्र। हम तीसरे स्थान पर हैं। बुध और शुक्र के पास कोई चंद्रमा नहीं है, लेकिन हमारे पास एक चंद्रमा है। उस पर सूर्य की रोशनी पड़ती है और वह चमकता रहता है। तुम्हें जानकर आश्चर्य होगा कि हम कभी भी पूरे चांद को नहीं देख पाते। हमेशा उसका एक ही हिस्सा हम देख पाते हैं। जानते हो ऐसा क्यों होता है? ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि जितने समय में वह हमारी पृथ्वी का एक चक्कर लगाता है, उतने ही समय में अपनी धुरी पर भी एक चक्कर लगा लेता है। इस कारण हमें उसका एक ही हिस्सा दिखता है और दूसरा हिस्सा हमेशा अंधेरे में रहता है। चांद को पृथ्वी का एक चक्कर लगाने में लगभग 27 दिन 7 घंटे और 43 मिनट का समय लग जाता है। यह हमारी पृथ्वी से काफी करीब भी है। पृथ्वी से इसकी औसत दूरी लगभग 3 लाख 84 हजार 400 किलोमीटर है। यानी पृथ्वी से चंद्रमा की दूरी कभी कम और कभी अधिक हो जाती है। जब चंद्रमा पृथ्वी से दूर होता है, उस समय यह दूरी लगभग 4 लाख 5 हजार 500 किलोमीटर होती है और जब चंद्रमा पृथ्वी के करीब आ जाता है तो दोनों के बीच की दूरी 3 लाख 56 हजार 300 किलोमीटर हो जाती है। शायद तुम्हें यह मालूम नहीं होगा कि समुद्र में बड़ी-बड़ी लहरें कब और क्यों उठती हैं। यह अपने चंद्रमा के कारण ही होता है। जब चंद्रमा और पृथ्वी के बीच की दूरी कम होती है तो समुद्र में ऐसी लहरें उठती हैं। इसका कारण है चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण बल। वैसे तो यह बल पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण बल के छठे हिस्से के बराबर है, लेकिन समुद्र के पानी पर उसका असर हो ही जाता है। अगर तुम वहां जाना चाहो तो रॉकेट से सिर्फ 13 घंटे में पहुंच सकते हैं। प्रकाश को तो इतनी दूरी तय करने में दो सेकेंड भी नहीं लगते हैं। चंद्रमा का व्यास 3476 किलोमीटर है। अगर तुम ऐसे चार चंद्रमाओं को मिला दोगे तो जितना बड़ा चंद्रमा बनेगा, उतनी ही बड़ी है हमारी पृथ्वी। यानी हमारी पृथ्वी का लगभग एक चौथाई आकार है चंद्रमा का। यहां न तो हवा है और न ही मौसम। वैज्ञानिकों ने यह भी पता लगा लिया है कि पृथ्वी की एक बड़ी टक्कर से चंद्रमा बना। यह टक्कर आज से लगभग 4.5 अरब वर्ष पहले हुई थी।

भोलू बना सितारा

भोलू, नमन, दिव्या और आंचल जगदंबा बस्ती में रहते थे। नमन और दिव्या को पढ़ना बहुत अच्छा लगता था। भोलू को ड्रामा पसंद था और आंचल को डांस करना अच्छा लगता था। सभी की उम्र 10 से 12 साल थी। इन दिनों चारों बच्चे अपने ही स्कूल में ड्रामा सीख रहे थे। ड्रामा, कला अकादमी के सौजन्य से किया जा रहा था। कला अकादमी ने निर्धन वर्ग के बच्चों की प्रतिभा को तलाशने के लिए यह समर क्लास शुरू की थी।

डेढ़ महीने के बाद कला अकादमी के द्वारा ही प्रसिद्ध हिन्दी लेखकों की कहानी पर इन्हीं बच्चों के द्वारा ऑडिटोरियम में मंचन भी किया जाना था। भोलू, नमन, दिव्या और आंचल के साथ अनेक बच्चे यहां पर साथ-साथ अभिनय का प्रशिक्षण ले रहे थे। समय मिलने पर कला के शिक्षक अमृत कौर, नैना और अमन बच्चों को नैतिक कहानियां व महापुरुषों के प्रसंग भी सुनाते। समय मिलने पर बच्चे खेलते भी थे। सभी बच्चों को प्रेमचंद की कहानियों का मंचन करना था। भोलू, नमन, दिव्या और आंचल के ग्रुप को प्रेमचंद की कहानी 'पंच परमेश्वर' का मंचन करना था। एक दिन भोलू की तबीयत खराब हो गई और वह अभिनय कक्षा में नहीं जा पाया। भोलू को 'जुम्मन मियां' का मुख्य किरदार सौंपा गया था। इसलिए शिक्षकों के साथ ही सभी बच्चों को भी चिंता लग गई कि आखिर भोलू कब ठीक होगा? अमृत मैडम बोलीं, 'भोलू तो बहुत अच्छी एक्टिंग करता है। ऐसे में उसकी कमी बहुत खल रही है। आखिर भोलू को हुआ क्या है?' अगले दिन नमन ने अमृत मैडम से कहा, 'मैडम, भोलू की तबीयत प्रदूषित वातावरण और गंदे पानी से खराब हुई है। कल उसे उसकी मम्मी डॉक्टर के पास लेकर गई थीं। भोलू तो आज यहां आना चाह रहा था। वह बोल रहा था कि मैं बिल्कुल ठीक हूं।' लेकिन डॉक्टर ने उसे दो दिन आराम करने के लिए बोला है।' नमन की बात पर दिव्या बोली, 'मैडम, हमारी जगदंबा बस्ती के पास ही लोग कूड़ा डालते हैं, जिससे पूरी कॉलोनी में बदबू आने लगी है।'

दिव्या की बात सुनकर अमन सर बोले, 'क्या वहां सफाई कर्मचारी नहीं आते?' आंचल बोली, 'सर, आते हैं, लेकिन वह तो ऊपर-ऊपर सफाई करके चले जाते हैं।' बच्चों की बातें सुनकर अमृत, नैना और अमन बहुत दुखी हुए। अमृत, नैना और अमन तीनों ही यंग टीचर थे। तीनों ने अपनी कक्षा के पचास बच्चों को उस दिन एक्टिंग की शिक्षा देने के बजाय स्वच्छता का पाठ पढ़ाया और अगले दिन उनकी कॉलोनी के पास बने कूड़े के ढेर को साफ करने का वायदा भी किया। उन्होंने कक्षा के सभी बच्चों से कहा कि कल पुराने और साफ कपड़े पहनकर आएं। अगले दिन कक्षा में नैना ने सभी बच्चों को रबड़ के दस्ताने दिए, अमन ने मुंह पर लगाने वाले मास्क बांटे। अमृत कौर के पिता की भवन निर्माण सामग्री की दुकान थी। इसलिए वह अपने यहां से सीमेंट और टूट-फूट की मरम्मत का कच्चा माल लेकर आई हुई थी। सभी बच्चे अपने शिक्षकों के साथ जगदंबा कॉलोनी में जा पहुंचे। इसके बाद वहां की सफाई का कार्य युद्ध स्तर पर शुरू हुआ। बच्चों व शिक्षकों को काम पर लगे देखकर जो लोग घरों में मौजूद थे, वे भी वहां हाथ बंटाने के लिए आ पहुंचे। सीमेंट व पत्थरों से गड्ढों को भरना शुरू किया गया। अमन ने एमसीडी को फोन कर के कचरा गाड़ी भी मंगवा ली थी। जिस कूड़े को लोग घरों के आस-पास फेंक देते थे, उसे उठवाया गया और वहां पर एक बड़ी कचरा पेटी लगाई गई। इसके साथ ही प्रत्येक घर को ढंके हुए डस्टबिन दिए गए ताकि वे अपने कूड़े को उसमें डालें और बंद करके रखें।

कुछ ही घंटों में जगदंबा कॉलोनी की सूरत बदल चुकी थी। अब वहां रहने वाले लोगों को अपनी गली पहचान में ही नहीं आ रही थी। बस्ती के सभी लोगों ने बच्चों के साथ कला के शिक्षकों को भी धन्यवाद किया। दो दिन बाद भोलू कुछ ठीक हुआ और अपनी क्लास में आया। वह जुम्मन मियां के किरदार को बहुत ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत कर रहा था। इसी तरह हंसी-खुशी में डेढ़ महीना बीत गया और 22 जून की तारीख आ गई। इस दिन कमानी ऑडिटोरियम में बच्चों की कला और अभिनय की परीक्षा थी। सभी ने अपने डायलॉग याद किए हुए थे। कला अकादमी की ओर से स्वास्थ्य मंत्री को मुख्य अतिथि के रूप में बुलाया गया था। कला अकादमी द्वारा बारह केंद्रों पर विभिन्न स्थानों के बच्चों को प्रशिक्षित किया गया था। सभी की कहानियों का मंचन 22 जून से 25 जून तक किया जाना था। 'पंच परमेश्वर' की कहानी का मंचन 22 जून को पांच बजे प्रारंभ होना था। पंच परमेश्वर के पात्रों के अनुरूप बच्चों ने पोशाकें पहनी हुई थीं और मेकअप किया हुआ था। जैसे ही कहानी नाटक रूप में प्रस्तुत हुई, वैसे ही सभी पात्रों ने अपने-अपने अभिनय को जीवंत करना शुरू कर दिया। भोलू का जुम्मन मियां का किरदार सभी पर भारी पड़ा।

सभी बच्चों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए और जिनका अभिनय श्रेष्ठ था, उन्हें स्वास्थ्य मंत्री द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। भोलू को भी सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार प्राप्त हुआ। जब भोलू के माता-पिता को मंच पर बुलाया गया तो वे खुशी से फूले नहीं समा रहे थे। दोनों की आंखों में खुशी के आंसू थे।

जोकर की हंसी है बड़ी पुरानी

बात जोकर की हो और डैन राइस का जिक्र न हो, यह कैसे हो सकता है। जी हां! डैन राइस ही वो शख्स हैं, जिन्होंने अंकल सैम जैसे मशहूर किरदार का परिचय दुनिया से कराया। राइस का हास्य पैदा करने का तरीका एकदम जुदा था, वे समकालीन घटनाओं से हास्य निकाल लेते थे। लेकिन 19वीं शताब्दी के मध्य में रेडियो और फोटोग्राफ के बाजार में आने के बाद जोकर भी सुरीला हो चुका था। वह अब खुद संगीत तैयार कर दर्शकों के सामने मधुर हास्य परोसता था। इतना ही नहीं, अब तरह-तरह के जोकर मनोरंजन के लिए तैयार थे। चाहे वो चेहरे पर सफेद रंग लगाए हुए जोकर का परम्परागत रूप हो या फिर लाल चेहरे वाले ढीले-ढाले कपड़े पहने हुए ऑगस्ते जोकर। इसके अलावा, अपने रोचक संवादों से दर्शकों का दिल जीतने वाले चॉकलेट जोकर, जिन्हें मेकअप की खास जरूरत नहीं थी। चेहरे का गहरा रंग होने के कारण वे केवल सफेद रंग का इस्तेमाल करते थे। जेम्स मैकइन्टायर और टॉम हीथ ने सन् 1874 में 'ट्रैम्प क्लाउन' को ईजाद किया, जिसमें काले चेहरेवाले अफ्रीकी जोकर के चेहरे पर सफेद रंग लगाया जाता था। अब जोकर डांस भी कर सकता था, जिसे बाद में टैप डांसिंग के नाम से जाना गया। इस तरह धीरे-धीरे दिन बदला, समय बदला और जोकर भी। अब जोकर उत्सवों और कर्निवाल्स में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेने लगा था। सारी दुनिया में इस हास्य किरदार ने अपनी पहचान बना ली थी। आज यह संसार के किसी भी कोने में जाना-पहचाना चेहरा है। हमारे देश में इस दिलचस्प किरदार की कोई कमी नहीं।

सर्कस के परदे के पीछे से लेकर 70 एमएम की स्क्रीन तक जोकर को एक एलग पहचान मिली। ऐसे में सन् 1970 में राज कपूर द्वारा निर्मित एवं निर्देशित 'मेरा नाम जोकर' को कैसे भुलाया जा सकता है। यह भारत में जोकर समुदाय पर बनी बेहतरीन फिल्मों में से एक है, जिसमें राजकपूर ने बड़ी ही संजीदगी से 'राजू जोकर' की भूमिका को निभाया। इसके अलावा, समय-समय पर लगने वाले सर्कस जोकरी परम्परा को आज भी जीवित रखे हुए हैं। इतना ही नहीं, ताश के 52 पत्तों में भी जोकर की मौजूदगी काफी अहम रहती है। टैरो कार्ड में भी जोकर भविष्य की जानकारी देते हैं। अधिकतर संस्कृतियों में इस किरदार की दखलंदाजी है। आमतौर पर हर जश्न को खुशनुमा बनानेवाले इस शख्स को अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है। तो आओ जानते हैं किस देश ने इसे क्या नाम दिया

जोकर भी होते हैं अंधविश्वास के शिकार...

जोकर कभी भी चेहरे पर नीला रंग इस्तेमाल नहीं करते हैं। उनके अनुसार, यह रंग अशुभता की निशानी है। इतना ही नहीं, प्रदर्शन से पहले जोकर अपने साथियों को शुभकामना नहीं देते, ऐसा करना उनके लिए श्राप देने जैसा है।

बजट 2026 की तैयारी: आगामी बजट को लेकर झुंझुनूं में मंथन, प्रभारी मंत्री अविनाश गहलोत ने लिए सुझाव

कलेक्ट्रेट सभागार में हर वर्ग की आवाज, विकास के लिए मिले अहम सुझाव व जनभागीदारी से बजट निर्माण की पहल

भीम प्रज्ञा न्यूज़.झुंझुनूं।

जिले के प्रभारी मंत्री अविनाश गहलोत की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में आगामी राज्य बजट के संबंध में समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधियों एवं हितधारकों के साथ सुझाव बैठक आयोजित की गई। बैठक में झुंझुनूं विधायक राजेंद्र भांबू, जिला प्रमुख हर्षिनी कुलहरी, पूर्व विधायक शुभकरण चौधरी, पूर्व विधायक सुभाष पूनिया, पूर्व उपजिला प्रमुख बनवारीलाल सैनी, जिला कलक्टर डॉ. अरुण गर्ग, पुलिस अधीक्षक बृजेश ज्योति उपाध्याय तथा जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग अध्यक्ष मनोज कुमार मील सहित अनेक जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी उपस्थित रहें। बैठक में विभिन्न विभागों व सामाजिक वर्गों से जुड़े प्रतिनिधियों द्वारा क्षेत्रवार महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए गए। स्वास्थ्य एवं चिकित्सा क्षेत्र में आरजीएचएस के अंतर्गत निजी अस्पतालों के लंबित भुगतान शीघ्र दिलवाने, निजी अस्पतालों के लाइसेंस नवीनीकरण व एनओसी प्रक्रिया को सरल बनाने, कोटा मॉडल लागू करने तथा दंत चिकित्सा की दरों में संशोधन की मांग की गई। इसके साथ ही जिले के उपजिला अस्पतालों में रेडियोलॉजिस्ट व सोनोलॉजिस्ट की नियुक्ति, चिड़ावा, बगड़ व सिंघाना में ट्रॉमा सेंटर खोलने, ओपीडी के आधार पर अस्पतालों का क्रमोन्नयन तथा पीएचसी स्तर पर लैब तकनीशियन के पद सृजन के सुझाव आए। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता के अंतर्गत आदिवासी-मीणा समाज की महिलाओं के लिए जिला मुख्यालय पर छात्रावास हेतु भूमि आवंटन, बधिर व्यक्तियों के लिए साइन लैंग्वेज जानने वाले कार्मिक की नियुक्ति तथा अनुजा निगम के बजट में वृद्धि की मांग रखी गई। जिला उपभोक्ता विवाद

प्रतितोष आयोग अध्यक्ष मनोज कुमार मील ने जिले में सांध्यकालीन उपभोक्ता कोर्ट की स्वीकृति, परिवहन विभाग के चालान उपभोक्ता आयोग के माध्यम से वसूली, पीएचईडी में एमनेस्टी योजना लागू करने, स्ट्रीट वेंडर्स का समूह बीमा व लाइसेंसिंग, सहकारी समितियों में बीमा क्लेम का समयबद्ध व ऑनलाइन निस्तारण, फसल खराबे की सूचना 72 घंटे में ग्राम पंचायत स्तर पर देने का प्रावधान, स्मार्ट मीटर जांच लैब तथा खाद्य सामग्री में मिलावट जांच के लिए जिला मुख्यालय पर प्रयोगशाला खोलने जैसे सुझाव दिए। कृषि विभाग से जुड़े सुझावों में चिड़ावा में घोषित कृषि महाविद्यालय हेतु भूमि आवंटन, जिले में एग्रो-टूरिज्म नीति, मारवाड़ी नस्ल के घोड़ों के संरक्षण एवं जैविक खेती के लिए जिला स्तर पर पंजीकरण व भंडारण सुविधा शामिल रही। गौपालन क्षेत्र में जिला स्तर पर गौपालन डेस्क की स्थापना, गौशालाओं को दिए जाने वाले अनुदान के नियमों में शिथिलता, कर्मचारियों को तकनीकी प्रशिक्षण तथा किसान क्रेडिट कार्ड की तर्ज पर गौपालन क्रेडिट कार्ड जारी करने की मांग की गई। खेल एवं युवा वर्ग से खेल विश्वविद्यालय, बास्केटबॉल, फुटबॉल व कबड्डी अकादमियों की स्थापना, विवेकानंद पुस्तकालय निर्माण तथा अनुप्रति कोचिंग योजना को ब्लॉक स्तर तक विस्तारित करने के सुझाव आए।

उद्योग व वाणिज्य क्षेत्र में बबाई में एयरपोर्ट स्थापना, हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड को पुनः सुचारू करने, आईटीआई में रोबोटिक्स व एआई कोर्स शुरू करने तथा कृषि भूमि पर उद्योग लगाने के लिए बिजली, सड़क व जल निकासी जैसी आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने की मांग रखी गई। वहीं राइजिंग राजस्थान के तहत दी जाने वाली सब्सिडी को कम किश्तों में देने तथा जीएसटी पंजीकरण का विकेंद्रीकरण जिला स्तर पर करने का सुझाव भी दिया गया। राजीविका, महिला एवं बाल अधिकारिता से जुड़े सुझावों में राजीविका महिलाओं को आरजीएचएस सुविधा, न्यूनतम मजदूरी के बराबर मानदेय, जिला स्तर पर राजीविका मार्ट व ट्रेनिंग हब की स्थापना, संविदा कार्मिकों को आयुष्मान भारत योजना का लाभ, महिलाओं को पीरियड लीव, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का मानदेय बढ़ाने, पोषाहार की क्षेत्रीय उपलब्धता के आधार पर व्यवस्था तथा बाल कल्याण समिति गठन की मांग शामिल रही। कम्प्यूटर शिक्षा के तहत बीएड ब्रिज कोर्स शुरू करने, विद्यालयों में कम्प्यूटर विज्ञान को ऐच्छिक विषय के रूप में लागू करने, प्रत्येक उच्च माध्यमिक विद्यालय में एआई व रोबोटिक्स लैब स्थापित करने तथा सरकारी कार्यालयों में यूनिकोड/मंगल फॉन्ट लागू करने के सुझाव दिए गए। बैठक में डॉ. कमल सैनी, डॉ. कमल मीणा, मुकेश मांजलू, जमील पठान, मालती शर्मा, सतवीर झाझरिया, विजय हिंद जालिमपुरा, सुरेंद्र केडिया, धर्मपाल जानू, खुशबू सहित विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहें।

राष्ट्रीय युवा दिवस: चिड़ावा सेडी में युवाओं और माताओं का सम्मान

एसडीएम नरेश सोनी ने दीं शुभकामनाएँ

भीम प्रज्ञा न्यूज़.चिड़ावा।

राष्ट्रीय युवा दिवस और स्वामी विवेकानंद की जयंती के उपलक्ष्य में सेडी (SEDI) अंबुजा फाउंडेशन में भव्य सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एसडीएम डॉ. नरेश सोनी रहे विशिष्ट अतिथि नाबार्ड से डीडीएम सौरव नागपाल रहें । समारोह की शुरुआत अतिथियों द्वारा स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर की गई। सेकसरिया चैरिटेबल ट्रस्ट के प्रतिनिधि सतीश शर्मा (ओजटू वाले) ने अतिथियों का साफा और शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया। इस दौरान अंबुजा फाउंडेशन के प्रोग्राम मैनेजर अनिल गुप्ता और सेडी इंचार्ज खुशबू सैंगर विशेष रूप से उपस्थित रहें। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण 'माता का सम्मान' पहल रही। इसके अंतर्गत जिले से बाहर छह माह से अधिक समय से रोजगार कर रहे 18 सेडी ग्रेजुएट प्रशिक्षुओं की माताओं को 5,000-5,000 रुपये की सम्मान राशि के चेक भेंट किए गए। इसके अलावा, एक वर्ष का सफल कार्यकाल पूर्ण करने वाले युवाओं को 'सिल्वर आइकन' और

पढ़ाई जारी रखने वाले युवाओं को 'अपस्किलिंग चेक' वितरित किए गए।

कौशल विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से ईडीपी (EDP) प्रशिक्षणार्थियों को टूल किट प्रदान किए गए। वहीं, विभिन्न प्रशिक्षण भागीदारों के माध्यम से चयनित हुए युवाओं को नियुक्ति पत्र (ऑफर लेटर) सौंपे गए। कार्यक्रम के दौरान युवाओं ने रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ देकर समां बांध दिया। इस अवसर पर सौरभ नागपाल ने युवाओं को संबोधित करते हुए कौशल विकास और आत्मनिर्भरता के महत्व पर प्रकाश डाला और विवेकानंद के आदर्शों पर चलने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के दौरान सेडी का स्टाफ और ? प्रशिक्षणार्थी उपस्थित रहें।

सावित्रीबाई फुले जयंती पर महिला शिक्षिकाओं का सम्मान, अंबेडकर कल्याण परिषद का भव्य आयोजन

भीम प्रज्ञा न्यूज़.लाखेरी(बूंदी)।

विष्णु प्रसाद बैरवा । माता सावित्रीबाई फुले जयंती के अवसर पर अंबेडकर कल्याण परिषद लाखेरी की ओर से महिला शिक्षिकाओं के सम्मान में एक भव्य, प्रेरणादायी एवं सामाजिक चेतना से ओतप्रोत समारोह का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम महिला शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, दलित उत्थान तथा भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर और माता सावित्रीबाई फुले के विचारों को समर्पित रहा।कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा एवं माता सावित्रीबाई फुले के चित्र पर माल्यार्पण कर किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि प्रदेश स्तरीय समाजसेविका गायत्री सैनी रहीं, जबकि अध्यक्षता सेवानिवृत्त शिक्षिका कैलाश मीणा ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में शिक्षिकाएं अकीला हनीफी, प्रभावती एवं मंजू वर्मा उपस्थित रहीं। मंच संचालन समाजसेविका एवं सेवानिवृत्त चिकित्सा विभाग की शीला त्यागी ने किया। इस अवसर पर

महिला अतिथियों एवं शिक्षिकाओं का अंबेडकर कल्याण परिषद लाखेरी के संरक्षक डॉ. रामनिवास मीणा द्वारा भीम दुपट्टा, पुष्पगुच्छ एवं माता सावित्रीबाई फुले का स्मृति-चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया। सम्मानित होने वालों में गायत्री बाई, तुलसी बाई, द्रौपदी बाई, अकीला, कैलाश मीणा, शीला त्यागी, चंद्रकला बाई, लक्ष्मीबाई, कमलाबाई, चंद्रप्रभा, संतोष बाई, पिंकी सुमन, अनीता वर्मा, संगीता कुमारी, श्यामा बाई सहित अनेक शिक्षिकाएं शामिल रहीं। मुख्य अतिथि गायत्री सैनी ने कहा कि माता सावित्रीबाई फुले ने उस दौर में शिक्षा की अलख जगाई जब महिलाओं को पढ़ने का अधिकार तक नहीं था। उनका जीवन संघर्ष, साहस और सामाजिक परिवर्तन की मिसाल है। उन्होंने कहा कि आज की महिला शिक्षिकाएं उन्हीं के विचारों को आगे बढ़ा रही हैं।

मंच संचालक शीला त्यागी ने कहा कि दलित, शोषित और वंचित समाज का वास्तविक उत्थान शिक्षा से ही संभव है। डॉ. अंबेडकर और सावित्रीबाई फुले ने शिक्षा को सामाजिक क्रांति का सबसे सशक्त माध्यम माना। कार्यक्रम में राजस्थान शिक्षक संघ अंबेडकर से जुड़े पदाधिकारियों एवं शिक्षकों का भी सम्मान किया गया। इसमें बूंदी जिले के जिला सभाध्यक्ष अमर सिंह बैरवा, जिला उपाध्यक्ष पृथ्वी लाल मीणा, लाखेरी ब्लॉक संरक्षक राकेश कुमार बैरवा, सभाध्यक्ष चंद्र मोहन पलिया, सलाहकार देवकिशन पलिया, ब्लॉक अध्यक्ष गुलाबचंद मेवलिया, महिला मंत्री मंजू वर्मा सहित अनेक शिक्षक एवं शिक्षिकाएं मौजूद रहीं। साथ ही इंद्रगढ़ ब्लॉक से भी संगठन के पदाधिकारी कार्यक्रम में शामिल हुए। इस अवसर पर परिषद द्वारा आगामी 14 अप्रैल 2026 को मनाई जाने वाली डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती के लिए एडवोकेट विनोद कुमार बैरवा, दुगाशंकर मीणा एवं सलीम मोहम्मद को संयोजक नियुक्त किया गया। नवनियुक्त संयोजक एडवोकेट विनोद कुमार बैरवा ने कहा कि 14 अप्रैल 2026 को लाखेरी में अंबेडकर जयंती ऐतिहासिक एवं भव्य रूप से मनाई जाएगी। परिषद अध्यक्ष रामशंकर बड़ोदिया ने कहा कि महिला शिक्षा ही समाज की वास्तविक शक्ति है और सावित्रीबाई फुले व डॉ. अंबेडकर के विचार आज भी हमारे मार्गदर्शक हैं। कार्यक्रम के समापन पर सभी अतिथियों व सहभागियों का आभार व्यक्त करते हुए स्नेह-भोज का आयोजन किया गया।

स्वामी विवेकानंद जयंती पर एनसीसी कैडेट्स की पोस्टर प्रदर्शनी, भाषण, पुलिस स्टेशन भ्रमण एवं चित्र भेंट कार्यक्रम

भीम प्रज्ञा न्यूज़.मंडावा।

पवन कुमार शर्मा । स्वामी विवेकानंद जयंती एवं राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर आदर्श विद्या मंदिर, मंडावा में प्रेरणादायक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 3 राज नेवल यूनिट एनसीसी, जयपुर के कैडेट्स द्वारा स्वामी विवेकानंद जी के विचारों पर आधारित पोस्टर प्रदर्शनी आयोजित की गई। कैडेट्स द्वारा तैयार किए गए पोस्टरों में युवा शक्ति, आत्मविश्वास, अनुशासन, राष्ट्रभक्ति एवं चरित्र निर्माण जैसे विषयों को प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया गया। प्रदर्शनी ने विद्यार्थियों में स्वामी विवेकानंद जी के आदर्शों के प्रति जागरूकता उत्पन्न की। कार्यक्रम के दौरान एनसीसी कैडेट साक्षी शर्मा ने स्वामी विवेकानंद जी के जीवन एवं विचारों पर प्रेरणादायक भाषण प्रस्तुत किया। इसी क्रम में एनसीसी कैडेट्स ने अपने द्वारा निर्मित स्वामी विवेकानंद जी का चित्र विद्यालय के प्रधानाचार्य मुकेश कुमार स्वामी को भेंट किया, जिसे उन्होंने स्वीकार करते हुए कैडेट्स की कला एवं भावनात्मक अभिव्यक्ति की सराहना की। इस दौरान एनसीसी कैडेट्स एवं विद्यार्थियों द्वारा स्थानीय पुलिस थाना का शैक्षिक भ्रमण किया गया, जहाँ थानाधिकारी रामनारायण चोयल ने उन्हें पुलिस विभाग की कार्यप्रणाली, कानून-व्यवस्था, नागरिक सुरक्षा एवं अनुशासन से अवगत कराया।

इस अवसर पर सीटीओ गोविंद सोनी ने कहा कि ऐसे कार्यक्रम विद्यार्थियों में अनुशासन, कर्तव्यबोध एवं राष्ट्रसेवा की भावना को सुदृढ़ करते हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रधानाचार्य मुकेश कुमार स्वामी ने इसे विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की दिशा में एक प्रेरक एवं सार्थक पहल बताया। संस्था निदेशक अभिषेक तेतरवाल ने स्वामी विवेकानंद जी के विचारों की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए युवाओं को सकारात्मक सोच और सेवा भाव अपनाने का संदेश दिया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में राष्ट्रीय चेतना, अनुशासन एवं सामाजिक जागरूकता का विकास करना रहा।

युवा दिवस को लेकर निबंध लेखन कार्यक्रम आयोजित

भीम प्रज्ञा न्यूज़.मंडावा।

पवन कुमार शर्मा । रामादेवी महिला महाविद्यालय में 'युवाओं के लिए स्वामी विवेकानंद के विचार' विषय पर निबंध लेखन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्वयं सेविकाओं ने स्वामी के चित्र पर फूल माला अर्पित कर उन्हें नमन कर उनके विचारों पर निबंध लेखन किया। कार्यक्रम में 27 स्वयं सेविकाओं ने भागीदारी की। प्राचार्या डॉ आशा मिश्रा सभी को सम्बोधित करते हुए कहा कि स्वामी ने कहा है कि मनुष्य को नकारात्मक शिक्षा से बचना चाहिए और सकारात्मक विचारों को बढ़ावा देना चाहिए । उन्होंने व्यक्ति को अपने पैरों पर खड़े होने और जीवन के संघर्षों का सामना करने की बात कही है। एन एस एस प्रभारी डॉ नीतू सिंह ने छात्राओं को स्वामी जी के जीवन के रोचक तथ्यों से अवगत कराया। एन एस एस प्रभारी द्वितीय डॉ नरेश नैण के सानिध्य में सभी कार्य सम्पन्न हुए।

विद्यार्थी परिषद ने मनाई स्वामी विवेकानंद की जयंती

भीम प्रज्ञा न्यूज़.लक्ष्मणगढ़।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की ओर से सोमवार को स्वामी विवेकानंद जयंती व राष्ट्रीय युवा दिवस पर ऋषिकुल स्कूल, नारायण स्कूल, राजकीय महाविद्यालय लक्ष्मणगढ़ मे स्वामी विवेकानंद जयंती व राष्ट्रीय युवा दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थी परिषद के सतवीर लोयल, भाग संयोजक गगन चौधरी, ऋषिकुल स्कूल की प्रिंसिपल डॉ रेखा शर्मा व नारायण स्कूल के प्रिंसिपल सुखवीर मंचस्थ अतिथि थे। कार्यक्रम में स्वामी विवेकानंद के छाया चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी । इस अवसर पर अनमोल चौधरी, रामदयाल, अंकित डोटासरा, सोनू नरोदडा, मनीष सैनी, खुशी मील, मनीषा, प्रितम बलारा, मोहित , सरफराज, प्रदीप, भरत शर्मा, अभिषेक आदि कार्यकर्ता मौजूद थे।

चिड़ावा- जेबी कौशिक फाउंडेशन का निःशुल्क चिकित्सा शिविर आज

14 जनवरी को होगा गर्ल्स लाइब्रेरी का शुभारंभ

भीम प्रज्ञा न्यूज़.चिड़ावा।

शहर में स्वास्थ्य सेवाओं और शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से जे.बी. कौशिक फाउंडेशन, मुंबई द्वारा विशेष पहल की जा रही है। फाउंडेशन और मेट्रो मास हॉस्पिटल के संयुक्त तत्वावधान में आज मंगलवार को बिलास राय कौशिक की स्मृति में एक निशुल्क मल्टीस्पेशियलिटी चिकित्सा परामर्श एवं जांच शिविर का आयोजन किया जाएगा। स्थानीय प्रतिनिधि दीपक कौशिक ने बताया कि शिविर का आयोजन चिड़ावा के 'डोबी' स्थित जगदीश बिलास राय जी कौशिक की हवेली (बिलास राय कौशिक मार्ग) पर होगा। शिविर का समय सुबह 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक रहेगा। इसमें जयपुर के प्रसिद्ध मेट्रो मास हॉस्पिटल के अनुभवी चिकित्सक अपनी सेवाएं देंगे साथ में ही डॉ. हनुमान सिंह: जनरल फिजिशियन, डॉ. राकेश रंजन: हड्डी एवं जोड़ प्रत्यारोपण विशेषज्ञ डॉ. अदिति गौड़: आहार विशेषज्ञ डॉ. साधना शर्मा: वरिष्ठ होम्योपैथी चिकित्साधिकारी एवं लाइफ कोच शिविर में आने वाले मरीजों के लिए स्वास्थ्य से जुड़ी महत्वपूर्ण जांचें जैसे वजन, ब्लड शुगर, ब्लड प्रेशर और ईसीजी (श्वष्टत) पूरी तरह निशुल्क उपलब्ध रहेंगी। दीपक कौशिक ने क्षेत्रवासियों से अपील की है कि वे इस अवसर का लाभ उठाकर अपनी स्वास्थ्य जांच समय पर करवाएं। चिकित्सा शिविर के साथ-साथ फाउंडेशन शिक्षा के क्षेत्र में भी कदम बढ़ा रहा है। 14 जनवरी (मकर संक्रांति) के शुभ अवसर पर हवेली परिसर में ही 'गर्ल्स लाइब्रेरी' का शुभारंभ किया जाएगा। यह लाइब्रेरी स्थानीय छात्राओं को पढ़ाई के लिए एक शांत और बेहतर माहौल उपलब्ध कराएगी।

फतेहपुरा-नालपुर फीडर को अलग करने की मांग, ग्रामीणों ने उपखंड अधिकारी को सौंपा ज्ञापन

भीम प्रज्ञा न्यूज़.खेतड़ी।

फतेहपुरा-नालपुर फीडर को नालपुर से अलग करने की मांग को लेकर ग्राम पंचायत डाडा फतेहपुरा के ग्रामीणों ने मंगलवार को उपखंड अधिकारी को ज्ञापन सौंपा। ग्रामीणों ने ज्ञापन के माध्यम से विद्युत विभाग की लापरवाही का आरोप लगाते हुए जल्द समस्या के समाधान की मांग की। ग्रामीणों ने बताया कि मांदरी फीडर से नालपुर ग्राम तक विद्युत लाइन लगभग पूरी तरह से खींची जा चुकी है, केवल नालपुर ग्राम का कनेक्शन जोड़ना शेष है, इसके बावजूद अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई। इससे स्पष्ट होता है कि यह प्रशासनिक एवं विभागीय लापरवाही का मामला है। ग्रामीणों के अनुसार फतेहपुरा-नालपुर फीडर पर करीब 1600 विद्युत कनेक्शन हैं तथा फीडर लाइन लगभग 10 किलोमीटर लंबी है, जो तकनीकी दृष्टि से अत्यधिक जर्जर और असुरक्षित स्थिति में है। इस कारण कभी भी विद्युत दुर्घटना, जन-धन हानि अथवा पशु हानि की आशंका बनी हुई है। ग्रामीणों ने कहा कि सुरक्षा की दृष्टि से फीडर को अलग किया जाना अत्यंत आवश्यक है। ग्रामीणों ने चेतावनी दी कि यदि ग्राम

पंचायत डाडा फतेहपुरा की यह मांग शीघ्र पूरी नहीं की गई तो समस्त ग्रामवासी जन आंदोलन, धरना-प्रदर्शन एवं उच्च स्तरीय शिकायत दर्ज कराने के लिए बाध्य होंगे, जिसकी संपूर्ण जिम्मेदारी संबंधित विभाग की होगी। इस अवसर पर बिरजू सिंह, शेर सिंह, नरेंद्र सिंह, मनजीत सिंह, मोहित सिंह, कालू सिंह (पंच), विक्रम बबेरवाल, पूर्व छात्रसंघ सचिव दिनेश बबेरवाल, दीपक सिंह, भोपाल सिंह, गुड्डी देवी, नागेश सिंह, सुरेश सिंह, करतार सिंह, मनोज, राजेंद्र फौजी सहित सैकड़ों ग्रामीण उपस्थित रहे।

रोबोटिक घुटना रिप्लेसमेंट सेंटर टीबड़ा हॉस्पिटल की शानदार पहल

मकर संक्रांति पर्व पर पतंग वितरण करते हुए दिया सामाजिक जागरूकता का संदेश

भीम प्रज्ञा न्यूज़.सीकर।

सुमेर मीणा । बसंत विहार स्थित रोबोटिक घुटना रिप्लेसमेंट सेन्टर टीबड़ा हॉस्पिटल की ओर से मंकर संक्रांति पर्व के उपलक्ष में कल्याण सर्किल पर सामाजिक जागरूकता पतंग वितरण के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बच्चों, युवाओं एवं वरिष्ठ नागरिकों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। पतंग वितरण के माध्यम से उत्तरायण पर धूप के लाभ व रोबोटिक घुटना व कूल्हा रिप्लेसमेंट के लिये जागरूक किया गया। इस अवसर पर टीबड़ा हॉस्पिटल के संस्थापक एवं वरिष्ठ ऑर्थोपेडिक सर्जन डॉ.

रमाकान्त टीबड़ा ने मंकर संक्रांति पर्व के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यह पर्व सूर्य के उत्तरायण होने का प्रतीक है, जिसका धार्मिक के साथ-साथ वैज्ञानिक महत्त्व भी है। इस समय सूर्य की किरणों स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी होती हैं। डॉ. रमाकान्त टीबड़ा ने धूप एवं सूर्य प्रकाश के स्वास्थ्य संबंधी लाभों पर विशेष जोर देते हुए बताया कि नियमित रूप से धूप लेने से शरीर में विटामिन-डी का निर्माण होता है, हड्डियों व दांतों को मजबूती मिलती है, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है तथा सर्दियों में संक्रमण से बचाव होता है। सूर्य प्रकाश से रक्त संचार बेहतर होता है। फिजिशियन डॉ. विपिन महला व डॉ. अशोक कुमार मीणा ने बताया कि धूप से बनने वाला विटामिन-डी, ब्लड शुगर को नियंत्रित करने में सहायक होता है, जिससे शुगर रोगियों को लाभमिलता है। साथ ही बेहतर रक्त संचार के कारण हृदय पर दबाव कम पड़ता है, जो हृदय रोगियों के लिए भी लाभकारी है। सूर्य की किरणें उच्च रक्तचाप को नियंत्रण के लिए लाभकारी होती है। कार्यक्रम के अंतर्गत पतंग वितरण के माध्यम से बच्चों व युवाओं को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने, सामाजिक जिम्मेदारी निभाने एवं चाइनीज माँझे का बहिष्कार करने का संदेश दिया। कार्यक्रम में टीबड़ा हॉस्पिटल के चिकित्सक डॉ. रमाकांत टीबड़ा, डॉ. विपिन महला, डॉ. अशोक कुमार, डॉ. क्रुणाल राणा, डॉ. बालकृष्ण काबरा, शिव कुमार, शुभम, सज्जन कुमार, सरिता, अंजलि, अजय इत्यादि लोग उपस्थित रहे।

पिलानी में प्रियंका गांधी के जन्मदिन पर रक्तदान शिविर, विधायक पितराम काला ने किया उद्घाटन

भीम प्रज्ञा न्यूज़.पिलानी।

एआईसीसी महासचिव प्रियंका गांधी के जन्मदिवस के अवसर पर बिरला सार्वजनिक अस्पताल में विशाल स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। ऑल इंडिया कांग्रेस वर्कर्स कमेटी द्वारा आयोजित इस शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि पिलानी विधायक पितराम सिंह काला ने किया। शिविर को संबोधित करते हुए विधायक काला ने कहा कि रक्तदान एक महादान है, क्योंकि वैज्ञानिक तकनीक के बावजूद अभी तक रक्त का कोई विकल्प तैयार नहीं किया जा सका है। उन्होंने कहा कि मानव जीवन में रक्त जीवनदायिनी की भूमिका निभाता है। विधायक ने ऑल इंडिया कांग्रेस वर्कर्स कमेटी की इस पहल को सराहनीय बताते हुए सभी कार्यकर्ताओं और रक्तदाताओं का आभार जताया। जवाहरलाल नेहरू चिल्ड्रन एकेडमी स्कूल की प्राचार्या उषा सारस्वत के सौजन्य से आयोजित इस शिविर में युवाओं और कार्यकर्ताओं ने उत्साह दिखाया। पूरे कार्यक्रम के दौरान कुल 58 यूनिट रक्तदान किया गया। कार्यक्रम में ऑल इंडिया कांग्रेस वर्कर्स कमेटी के राष्ट्रीय महासचिव माधवानंद सारस्वत, प्रदेश सचिव संत कुमार चावला, प्रदेश महामंत्री ललित ढेंढवाल, जिला महामंत्री मनोज खन्ना, जिला सचिव सज्जन कटारिया, प्रदेश उपाध्यक्ष नंद किशोर, ब्लॉक अध्यक्ष सीमा सैनी और महिला विंग की प्रदेश सचिव मुन्नी सैनी मौजूद रहीं।

इसके अलावा डॉ. हरिसिंह सांखला (प्रदेश उपाध्यक्ष एससी विभाग), राजकुमार राठी (जिला अध्यक्ष, राजीव गांधी पंचायती राज संगठन), सुनील शर्मा (नगर अध्यक्ष), प्रेम प्रकाश मोयल, प्रदीप झाझड़िया, पूर्व अध्यक्ष होशियार सिंह, पूर्व अध्यक्ष हीरालाल नायक, प्रकाश सैनी, मोतीलाल बाडेटिया, अरविंद बाडेटिया सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

हाईवे पर कचरे के पहाड़ से शर्मसार मण्डावर, मुख्यमंत्री तक लगाई जनता ने गुहार

मंडावर विकास संघर्ष समिति ने मुख्यमंत्री व मुख्य सचिव के नाम एसडीएम को सौंपा ज्ञापन

भीम प्रज्ञा न्यूज़.मंडावर।

मनोज खंडेलवाल । मण्डावर शहर के मुख्य प्रवेश द्वार के पास महवा हाईवे किनारे वर्षों से जमा कचरे के पहाड़ ने आखिरकार जनता के सब्र की सीमा तोड़ दी है। मंडावर विकास संघर्ष समिति के बैनर तले समिति के अध्यक्ष व पूर्व सरपंच रामनिवास गोयल के नेतृत्व में बड़ी संख्या में नागरिकों ने राज्य के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और मुख्य सचिव के नाम उपखंड अधिकारी अमित वर्मा को ज्ञापन सौंपकर इस गंभीर समस्या पर तत्काल और कठोर कार्रवाई की मांग की है। ज्ञापन में साफ कहा गया है कि शहर की सफाई के बाद निकलने वाला कचरा, कीचड़ और गंदगी बिना किसी शर्म या जिम्मेदारी के हाईवे किनारे डाली जा रही है, जिससे मण्डावर की पहचान, गरिमा और सुंदरता पर सीधा आघात हो रहा है। प्रवेश द्वार के पास जमा यह कचरा तेज बदबू और सड़ांध फैलाकर राहगीरों को नाक ढककर गुजरने पर मजबूर कर रहा है, वहीं हवा चलने पर प्लास्टिक और गंदगी उड़कर सड़क पर फैल जाती है और आसपास की दुकानों व घरों के आगे जमा हो जाती है, जिसे स्थानीय लोगों को खुद साफ करना पड़ता है। इससे हर समय दुर्घटनाओं का खतरा बना रहता है और हाईवे पर चलना भी जोखिम भरा हो गया है। ज्ञापन में यह भी उल्लेख किया गया है कि एक ओर प्रधानमंत्री स्वयं स्वच्छता अभियान का संदेश दे रहे हैं, वहीं दूसरी ओर मण्डावर नगरपालिका के जिम्मेदार अधिकारी खुलेआम इस अभियान की धज्जियां उड़ाते नजर आ रहे हैं। लाखों रुपये की लागत से बने शहर के प्रवेश द्वार के पास कचरे का ढेर पूरे मण्डावर की छवि को खराब कर रहा है और बाहर से आने वाले लोगों के मन में शहर के प्रति नकारात्मक धारणा बना रहा है। इसी गंदगी के बीच हाईवे किनारे झुग्गी झोपड़ियों में रहने वाले घूमंतू परिवार नारकीय हालात में जीवन गुजारने को मजबूर हैं, जहां मच्छरों की भरमार, दुर्गंध और संक्रमण का खतरा हर पल मंडरा रहा है। कभी भी यह स्थिति महामारी का रूप ले सकती है, जिससे इन गरीब परिवारों की जान पर बन सकती है। एक तरफ सरकार घुमंतु और वंचित समाज के उत्थान की बात करती है, दूसरी तरफ नगरपालिका की यह लापरवाही उनके जीवन के साथ खुला खिलवाड़ साबित हो रही है। संघर्ष समिति ने मुख्यमंत्री और मुख्य सचिव से मांग की है कि मण्डावर-महवा हाईवे मार्ग पर जमा इस कचरे के पहाड़ को तत्काल हटवाया जाए, लापरवाह अधिकारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए और भविष्य में यहां कचरा डाले जाने पर स्थायी रोक लगाने की ठोस व्यवस्था सुनिश्चित की जाए, ताकि मण्डावर को इस गंदगी, दुर्गंध और कलंक से स्थायी मुक्ति मिल सके। ज्ञापन सौंपते समय सचिन सोनी, घूडमल सैनी, दुलीचंद बैरवा, राजेश गुर्जर, रामनिवास नेता, राहुल गुप्ता एडवोकेट सहित अनेक नागरिक मौजूद रहे। लोगों का साफ कहना है कि अब केवल आश्वासन नहीं, जमीन पर दिखाई देने वाली कार्रवाई चाहिए, ताकि मण्डावर की पहचान फिर से एक साफ-सुथरे, सभ्य और सम्मानित शहर के रूप में कायम हो सके।

सरकारी स्कूल में यातायात नियमों की दी जानकारी

भीम प्रज्ञा न्यूज़.अजीतगढ़।

सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान के तहत सोमवार को कस्बे की राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय अजीतगढ़ में सड़क सुरक्षा सप्ताह एवं युवा दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधानाचार्य जगदीश प्रसाद सैनी ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अजीतगढ़ पुलिस उपाधीक्षक प्रेम बहादुर निर्भय व थानाधिकारी विजय सिंह उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान डीप्टी एसपी प्रेम बहादुर निर्भय ने सड़क सुरक्षा व युवा दिवस से सम्बधित जानकारी दी और छात्र-छात्राओं को वाहन चलाते समय सावधानी बरतने की सलाह दी। इसी के साथ कुछ बच्चों की सड़क सम्बधित समस्याओं के बारे में सवाल जबाब भी किया।थानाधिकारी विजय सिंह ने बच्चों को मोबाइल व अनावश्यक सोशल मीडिया व ऑनलाइम गेम्स से दूरी बनाए रखने की बात कही।

सिंघानिया विश्वविद्यालय में फ्रेशर पार्टी का भव्य आयोजन, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से सजा कार्यक्रम

खेल प्रतिभाओं का सम्मान, एआईयू कुश्ती में कांस्य पदक विजेता छात्र विजय को किया गया सम्मानित

भीम प्रज्ञा न्यूज़.पचेरी।

सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी में नवप्रवेशी विद्यार्थियों के स्वागत हेतु विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक समिति के तत्वावधान में फ्रेशर पार्टी का भव्य एवं रंगारंग आयोजन किया गया। कार्यक्रम उत्साह, उमंग और प्रतिभा के शानदार प्रदर्शन का साक्षी बना, जिसमें विद्यार्थियों ने अपनी कला, आत्मविश्वास और व्यक्तित्व से सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के प्रेसिडेंट डॉ. मनोज कुमार (सेवानिवृत्त आईएएस) रहें। उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय की उपलब्धियों और बेंचमार्क पर प्रकाश डाला। डॉ. मनोज कुमार ने कहा कि सिंघानिया विश्वविद्यालय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए उत्कृष्ट शैक्षणिक वातावरण, आधुनिक आधारभूत सुविधाएं और खेलों के लिए प्रोत्साहन प्रदान कर रहा है। उन्होंने बताया कि आसपास के क्षेत्रों के विद्यार्थियों के लिए वर्ल्ड क्लास इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित किया जा रहा है। खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने स्वर्ण पदक विजेता को 11 हजार रुपए, रजत पदक विजेता को 71 सौ रुपए तथा कांस्य पदक विजेता को 51 सौ रुपए की प्रोत्साहन राशि देने की घोषणा की। इसी अवसर पर उन्होंने चंडीगढ़ विश्वविद्यालय में आयोजित एआईयू कुश्ती प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के छात्र विजय द्वारा 79 किलोग्राम भार वर्ग में कांस्य पदक जीतने पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने बताया कि इस राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में देशभर के 250 से अधिक विश्वविद्यालयों ने भाग लिया था, जिससे विजय की उपलब्धि और भी गौरवपूर्ण बन जाती है। छात्र विजय को 51 सौ रुपए की पुरस्कार राशि देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों की आकर्षक श्रृंखला देखने को मिली। विद्यार्थियों ने नृत्य, गीत, कविता, स्किट और रैम्प वॉक के माध्यम से अपनी प्रतिभा का प्रभावशाली प्रदर्शन किया। रैम्प वॉक में विद्यार्थियों ने आत्मविश्वास और व्यक्तित्व का शानदार परिचय दिया। पेपर डांस प्रतियोगिता में बालक वर्ग से दीपक एवं आशीष तथा बालिका वर्ग में जीनत एवं विद्या विजेता रहीं। विद्या की स्टैंड-अप कॉमेडी ने दर्शकों को खूब हंसाया और तालियां बटोरीं। अभिमन्यु पराशर ने सिंघानिया विश्वविद्यालय पर आधारित कविता का सशक्त पाठ किया। दीपक एवं मनीष के गीतों ने कार्यक्रम को संगीतमय बना दिया, वहीं विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत स्किट कार्यक्रम का विशेष आकर्षण रही। दुर्गेश, जीनत, दिव्या, विद्या, रितिका और मनीषा की नृत्य प्रस्तुतियों ने समां बांध दिया।

इस अवसर पर कैंपस निदेशक प्रो. पी. एस. जस्सल ने विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए कहा कि सिंघानिया विश्वविद्यालय केवल शिक्षा का केंद्र नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का मंच है। उन्होंने विद्यार्थियों से नियमित कक्षाओं में उपस्थित रहने और विश्वविद्यालय की आधुनिक सुविधाओं का भरपूर लाभ उठाने का आह्वान किया। कार्यक्रम में कुलसचिव आई. हाशमी, शैक्षणिक निदेशक डॉ. एस. के. दुबे एवं प्रो-वाइस चांसलर डॉ. पवन त्रिपाठी ने भी विद्यार्थियों को प्रेरक संदेश दिए। फ्रेशर सम्मान समारोह के दौरान विभिन्न श्रेणियों में विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। श्रेष्ठ नवागंतुक (छात्र) का खिताब आदित्य (एमबीए प्रथम वर्ष) को तथा श्रेष्ठ नवागंतुक (छात्रा) का सम्मान जीनत (बीए एलएलबी) को मिला। सर्वाधिक प्रतिभाशाली (छात्र) का पुरस्कार आशीष (बी.टेक) को एवं सर्वाधिक प्रतिभाशाली (छात्रा) का सम्मान अमीशा (एम.ए. योग) को प्रदान किया गया। श्रेष्ठ व्यक्तित्व (छात्र) का खिताब रजनीश (बी.टेक) और श्रेष्ठ व्यक्तित्व (छात्रा) का सम्मान यशस्वी (बीबीए) को मिला। कार्यक्रम का सफल मंच संचालन द्वितीय वर्ष के विद्यार्थी दुर्गेश और नवीन ने किया। अंत में सभी अतिथियों, शिक्षकों और विद्यार्थियों के साथ सामूहिक फोटो सत्र हुआ। फ्रेशर पार्टी का समापन हर्षोल्लास और उत्साहपूर्ण वातावरण में हुआ, जिससे नवप्रवेशी विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय जीवन की एक प्रेरणादायक, आत्मविश्वास से भरी और यादगार शुरुआत मिली।

किशोरपुरा का प्रसिद्ध भैरुंजी मेला कल ,आज होगा जागरण

प्रतिवर्ष मकर संक्रांति पर्व पर लगता है ऊंटों का मेला कई प्रतियोगिताओं का होगा आयोजन

भीम प्रज्ञा न्यूज़.चंवरा।

सुमेर मीणा । उदयपुरवाटी उपखंड क्षेत्र के किशोरपुरा गांव के उत्तरी सीमा पर घाटी में स्थित भैरुंजी का मकर संक्रांति पर्व पर भरने वाले मेले की तैयारियों को सोमवार को अंतिम रूप दे दिया गया है। मीन सैना प्रमुख सुरेश मीणा किशोरपुरा, रामनिवास सैनी,सरपंच मोहनलाल सैनी, राजेश खटाणा ने बताया कि 14 जनवरी बुधवार को भरने वाले इस मेले में ऊंची कूद लंबी कूद कबड्डी ऊंट दौड़ घोड़ी दौड़ प्रतियोगिताओं के अलावा विशेष कुश्ती दंगल का आयोजन रखा गया है। जिसमें 500 रुपए से पहलवानों के अनुसार 21 हजार रूपए तक की कुश्ती करवाने का निर्णय लिया गया है। मेले में प्रतियोगिताओं का शुभारंभ सुबह 10 बजे किया जाएगा। प्रतियोगिताएं समय सारिणी अनुसार 10 बजे से 11 बजे तक ऊंची कूद-लम्बी कूद 11 बजे से 1 बजे तक कबड्डी तथा 2 बजे से 5 बजे तक कुश्ती दंगल होगा । विजेताओं को भामाशाहों एवं ग्रामपंचायत के द्वारा पुरस्कार दिया जाएगा। मेले की पुर्व संध्या 13 जनवरी को रात्रि में जागरण होगा। मेले की तैयारियों को लेकर भेरुजी महाराज से जुड़े भक्तों ने सोमवार को व्यवस्थाओं का जायजा लेकर अलग-अलग जिम्मेदारियां सौंपी गई है। इस बार पार्किंग की व्यवस्था भेरुजी महाराज के मंदिर से नीचे की तरफ की गई है। यात्रियों की सुविधाओं को देखते हुए दुकानदारों के लिए निर्धारित जगह का चयन किया गया है। मेले में शाति व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस एवं वॉलिंटियरों की व्यवस्था की गई है गौरतलब है कि भेरुजी महाराज का यह प्रसिद्ध मेला प्राचीन काल से भरता आ रहा है । बताया जाता है कि भेरुजी महाराज का यह प्राचीन मंदिर लग-भग 554 वर्ष पुराना है । इस मंदिर से आस-पास के गांवों के लोगों की आस्था जुडी हुई है । मेले में हजारों श्रद्धालु भक्तों का पहुंचने का अनुमान है।

मंडावर क्षेत्र में बिजली चोरी पर करारी चोट, विशेष अभियान में अवैध हुकिंग और पैरलल सर्विस लाइनें काटी

कोट, हल्दैना, गोपालगढ़ व सरावली में विद्युत विभाग की सख्त कार्रवाई, अवैध तार व सामान जब्त।

भीम प्रज्ञा न्यूज़.मंडावर।

मनोज खंडेलवाल । जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड के दौसा अधीक्षण अभियंता मिट्ठनलाल मीना के स्पष्ट निर्देशों की पालना में सोमवार को विद्युत विभाग मंडावर ने बिजली चोरी के खिलाफ सख्त रुख अपनाते हुए पूरे क्षेत्र में विशेष अभियान चलाकर बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया। सहायक अभियंता महेशचंद गुप्ता और कनिष्ठ अभियंता हरेन्द्र जाटव के नेतृत्व में गठित टीम ने मंडावर उपखंड के गांव कोट, हल्दैना, गोपालगढ़ और सरावली सहित आसपास के इलाकों में विद्युत निगम के पोलों पर अनाधिकृत रूप से डाली गई पैरलल सर्विस लाइनों, अवैध तारों और हुकिंग को मौके पर ही काटकर हटाया। कार्रवाई के दौरान बिजली चोरी में इस्तेमाल हो रहे सभी गैरकानूनी तार और अन्य सामग्री जब्त की गई, जिससे क्षेत्र में अवैध कनेक्शन करने वालों में हड़कंप मच गया। टीम ने मौके पर पकड़े गए लोगों को सख्त लहजे में समझाइश करते हुए बताया कि अवैध हुकिंग और पैरलल लाइनें कानूनन अपराध हैं और इससे जान-माल को गंभीर खतरा बना रहता है। अधिकारियों ने चेताया कि भविष्य में इस तरह की गतिविधियों में लिप्त पाए जाने पर कठोर कानूनी कार्रवाई की जाएगी। साथ ही लोगों को ईमानदारी से नया विद्युत कनेक्शन आवेदन कर वैध कनेक्शन लेने के लिए प्रेरित किया गया। सहायक अभियंता महेशचंद गुप्ता और कनिष्ठ अभियंता हरेन्द्र जाटव ने कहा कि बिजली चोरी से निगम को तो नुकसान होता ही है, साथ ही ईमानदार उपभोक्ताओं पर भी अतिरिक्त भार पड़ता है, इसलिए सभी नागरिकों का दायित्व है कि वे नियमों का पालन करें। इस विशेष अभियान में लाइनमैन मनोज बैरवा, सुरेश मीना सहित विद्युत विभाग मंडावर के अन्य कर्मचारी भी मौजूद रहें।

छात्र संगठन एसएफआई ने स्नातक परीक्षाओं कि समय सारणी में संशोधन को लेकर प्राचार्य को ज्ञापन सौंपा

भीम प्रज्ञा न्यूज़.उदयपुरवाटी।

सुमेर मीणा । राजकीय महाविद्यालय उदयपुरवाटी में छात्र संगठन एसएफआई ने परिक्षाओं कि समय सारिणी में परिवर्तन करने को लेकर प्राचार्य को कुल गुरु के नाम ज्ञापन सौंपा । तहसील महासचिव उदयपुरवाटी शिवा वर्मा ने प्रेस नोट जारी करते हुए बताया कि अभी शेखावाटी विश्वविद्यालय ने स्नातक परीक्षाओं की टाइम टेबल जारी किया है उसमें स्नातक प्रथम सेमेस्टर के परीक्षा का टाइम सुबह 8:00 बजे से 11:00 बजे तक का रखा है। तो आज छात्र संगठन में एसएफआई इस बात का विरोध कर रहा है क्योंकि वर्तमान समय में ठंड बहुत भयंकर है और ऐसे में विद्यार्थी ग्रामीण परिवेश से चलकर अपने-अपने परीक्षा केंद्रों तक रोजाना नहीं पहुंच सकते क्योंकि ग्रामीण परिवेश से यातायात की समस्या रहती है और एक तरफ ठंड इतनी ज्यादा है की जहां पर जिला कलेक्टर स्कूलों की तो ठंड की वजह से छुट्टी करते हैं और इधर कॉलेज वाले बच्चों को सुबह 8:00 बजे से परीक्षा देने को बोलते हैं 8:00 बजे से परीक्षा शुरू होने का मतलब है 7:30 बजे परीक्षा केंद्रों के अंदर प्रवेश बंद हो जाता है। इसलिए विद्यार्थियों को 7:00 बजे परीक्षा केंद्र तक पहुंचाना पड़ेगा जो कि हर हाल में इस कड़ाके की ठंड में एक चुनौती से कम नहीं, अध्यक्ष बबलू सैनी ने बताया कि ग्रामीण परिवेश से आने वाले प्रत्येक विद्यार्थी इतना सक्षम नहीं है कि वह अपने व्यक्तिगत साधन से परीक्षा देने पहुंच सके और सबसे खास समस्या लड़कियों के लिए है जब ऐसी हालत हो रखे हैं कि 11:00 तक कोहरा खत्म नहीं होता तो ऐसे में लड़कियां सुबह 5:00 बजे घर से कैसे निकल सकते हैं। छात्र नेता मुकेश मीणा ने बताया कि यह समस्या केवल राजकीय महाविद्यालय उदयपुरवाटी की ही नहीं है बल्कि शेखावाटी विश्वविद्यालय के अधिकार क्षेत्र में आने वाले सभी महाविद्यालय के बच्चों की समस्या है तो जल्द से जल्द परीक्षा का समय है 10:00 बजे से शुरू किया जाए अन्यथा छात्र संगठन आंदोलन करेगा इस दौरान मौजूद रहे तहसील महासचिव शिवा वर्मा, अध्यक्ष बबलू सैनी,छात्र नेता मुकेश मीणा, विकेश , ओम सिंग , अशोक, सुनील, गुज्जर, अनीता, अनामिका, सोनू, सुनीता, अंजली सहित कई महाविद्यालय के छात्र छात्राओं मौजूद रहे।

हीरवाना गौशाला में कलश यात्रा के साथ नानी बाई रो मायरो कथा का शुभारंभ

भीम प्रज्ञा न्यूज़.चंवरा।

सुमेर मीणा । क्षेत्र की प्रसिद्ध श्री कृष्ण गौशाला एवं नंदीशाला संस्थान चंवरा हीरवाना में मकर संक्रान्ति के अवसर पर बामलास धाम के महंत लक्ष्मण दास महाराज के सानिध्य में कथावाचक विपुल शास्त्री द्वारा नानी बाई रो मायरो कथा का शुभारंभ किया गया। इससे पूर्व महिलाओं द्वारा चंवरा के रघुनाथ जी मंदिर से जोहड़ी होते हुए हीरवाना गौशाला तक 4 किलोमीटर लंबी डीजे की धुन पर भव्य कलश यात्रा निकाली गई। कलश यात्रा का जगह-जगह ग्रामीणों ने पुष्प वर्षा कर स्वागत किया। सोमवार को कथा में शिव पार्वती की झांकी सजाई गई। नरसी भक्त द्वारा भगवान से प्रार्थना की गई कि मुझे आपके अलावा और कुछ नहीं चाहिए। कथा 14 जनवरी तक प्रतिदिन दोपहर 12:00 से शाम 5:00 बजे तक सुनाई जाएगी। इस दौरान नंदीशाला अध्यक्ष सुरेश मीणा किशोरपुरा, कोषाध्यक्ष बनवारी लाल जांगिड़, गोशाला अध्यक्ष शीशराम खटाणा, समाजसेवी राजेन्द्र दोराता, मोहन दास महाराज, रघुनाथ दास महाराज, सुल्तान रावत, रामकरण रावत, महावीर रावत, सुभाष चंद्र सैनी, सुभाष बराला, गिरधारी रावत, शेरसिंह खटाणा, हजारी लाल मीणा गुड़ा, प्रकाश मीणा, बाबूलाल शर्मा, मुकेश दाधीच, जयकिशन शर्मा, कालूराम स्वामी, गोपाल शर्मा सहित काफी संख्या में भक्त श्रद्धालु मौजूद रहे।

धर्मेन्द्र बने अखिल भारतीय रेलवे सैनी (माली) कर्मचारी-अधिकारी विकास संस्था के अध्यक्ष

भीम प्रज्ञा न्यूज़.लक्ष्मणगढ़।

अखिल भारतीय रेलवे सैनी (माली) कर्मचारी-अधिकारी विकास संस्था के अध्यक्ष पद हेतु शेखावाटी अंचल के खेतड़ी (झुनझुनु) निवासी धर्मेन्द्र कुमार सैनी को चुना गया है।रेलवे में मुख्य कार्यालय अधीक्षक के पद पर कार्यरत धर्मेन्द्र सैनी ने अपनी कड़ी मेहनत और समर्पण से यह उपलब्धि हासिल की है। धर्मेन्द्र सैनी लोकोपायलट रहते हुऐ लोको रनिंग एशोसिएशन के जोनल अध्यक्ष, जोनल महासचिव भी रह चुके हैं और उनकी नेतृत्व क्षमता को देखते हुए उन्हें इस पद के लिए चुना गया है।

मृदा नमूने जांच के व्यावहारिक प्रशिक्षण का आयोजन

भीम प्रज्ञा न्यूज़.लक्ष्मणगढ़।

पीएम श्री सावित्री गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल में मृदा स्वास्थ्य एवं प्रशिक्षण पर व्यवहारिक प्रशिक्षण का आयोजन उपप्राचार्य बाबूलाल वर्मा की अध्यक्षता में किया गया ।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सीबीईओ कार्यलय के सन्दर्भ व्यक्ति सुरेश कुमार भास्कर थे। कार्यक्रम का संचालन शिक्षिका विमला महरिया ने किया । कार्यक्रम में विद्यार्थियों और विद्यालय स्टाफ को मिट्टी की स्वास्थ्य गुणवत्ता एवं मिट्टी परीक्षण के लाभ एवं मृदा स्वास्थ्य कार्ड के उपयोग के बारे में बताया गया। एग्री क्लीनिक एवं मृदा परीक्षण प्रयोगशाला सीकर के सहायक कृषि अनुसंधान अधिकारी (रसायन) डॉ. गोविंद कुमार यादव ने मुख्य वक्ता के रूप में मृदा स्वास्थ्य कार्ड की खेती में भूमिका एवं उर्वरकों के संतुलित उपयोग पर प्रकाश डाला। कनिष्ठ वैज्ञानिक सहायक पुलकित सेवदा ने भी मृदा नमूना जांच एवं जांच से होने वाले लाभों के बारे में विद्यार्थियों को जानकारी प्रदान की। संदर्भ व्यक्ति सुरेश कुमार भास्कर ने कृषि उत्पाद में रसायनों के अंधाधुंध उपयोग से बचने का आव्हान किया। शिक्षक राजेन्द्र भास्कर ने खेती बाड़ी से जुड़ी प्रश्नोत्तरी के माध्यम से ज्ञानवर्धन करवाया।

स्व. रामेश्वर लाल सुंडा की पुण्यतिथि पर रक्तदान शिविर, 64 यूनिट रक्तदान संकलित

भीम प्रज्ञा न्यूज़.पलसाना।

श्री श्याम मित्र मंडल मंढ़ा की ओर से सोमवार को स्वर्गीय रामेश्वर लाल सुंडा की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में कुल 64 यूनिट रक्तदान कर मानव सेवा का संदेश दिया गया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रातः 10 बजे स्व. रामेश्वर लाल सुंडा की तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर की गई। शिविर की अध्यक्षता टैगोर शिक्षण संस्थान के निदेशक शंकर लाल देवंदा ने की। मुख्य अतिथि के रूप में सामाजिक कार्यकर्ता मोहनलाल देवंदा एवं मालीराम राबिया उपस्थित रहे, जबकि विशिष्ट अतिथि हरि सिंह महला एवं सोहनलाल साखूनिया रहें। अतिथियों ने रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि रक्तदान महादान है और इसके माध्यम से किसी जरूरतमंद की जान बचाई जा सकती है। उन्होंने समाज के प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति से नियमित रूप से रक्तदान करने का आह्वान किया। इस अवसर पर पौष बड़ा महोत्सव का भी आयोजन किया गया, जिसमें श्रद्धालुओं और ग्रामीणों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शिविर में भागीरथ मल सुंडा, सूरजमल बाजडोलिया, झुथाराम सुंडा, महेश राबिया, गोपाल सिंह सुंडा, मानवेन्द्र सिंह शेखावत, मुकेश सैनी, हरदेवराम जांगु सहित बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक, महिलाएं एवं पुरुष उपस्थित रहें।

लक्ष्मणगढ़ में विराट हिंदू सम्मेलन 01 फरवरी को

केशव बस्ती सर्व हिंदू समाज समिति का गठन

भीम प्रज्ञा न्यूज़.लक्ष्मणगढ़।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में हो रहें हिन्दु सम्मेलन के अंतर्गत केशव बस्ती में सर्व हिंदू समाज की मीटिंग रविवार को गौड़ ब्राह्मण भवन मे आयोजित की गई । मीटिंग में केशव बस्ती सर्व हिंदू समाज समिति का गठन किया गया तथा 1 फरवरी रविवार 2026 को रामलीला मैदान में विराट हिंदू सम्मेलन आयोजित करने का निर्णय लिया गया। कमेटी ने अध्यक्ष डा. रेखा शर्मा, उपाध्यक्ष राधेश्याम सैनी हरिप्रसाद मंडार, पंकज बाल्मीकि एवं सुमन शर्मा सचिव राम प्रसाद जडिया, सह सचिव जय शंकर पुजारी, प्रचार प्रमुख अर्चना बारी, कोषाध्यक्ष रमेश सोनी, सह कोषाध्यक्ष विनोद जैन को नियुक्त किया गया। मीटिंग में पुरुषोत्तम बील, जुगल किशोर, श्याम सुन्दर, रोहिताश, अमरचंद पुजारी, गोपाल शर्मा, रवि मुदगल, नरेंद्र पुजारी,संजय जोशी, सुमित कुमार, यश जैन,रामावतार,संजीव शर्मा, पवन कुमार, किशोर मिश्रा, डॉ. विनोद गुप्ता, अंकित सुरोलिया, प्रदीप दाधीच, जय सिंह, लक्ष्मीकांत चूड़ीवाला, अवनीश मुद्गल, प्रियंका गुप्ता, प्रदीप पाराशर, अरुण शर्मा, रेखा गोस्वामी, राजेश जोशी,मुकेश पुरोहित, हरफूल सिंह, देवेंद्र खीचड़, श्रवण कुमार खीचड़, रामकरण सेन, रघुनंदन शर्मा, प्रमोद जड़िया, पंकज नाऊवाला, प्रफुल्ल बजाज, विक्रम सिंह तंवर, लीलाधर भार्गव, केशव पारीक, विनोद सोनी, मुरारी लाल मिश्रा, रचना बारी, सुमन देवी आदि मौजूद थे। संचालन पुरूषोतम मीश्र ने किया। जबकि हिन्दु सम्मेलन की रुप-रेखा विवेक जांगीड तथा योजना के लिए राजकुमार खीरवाल, डा.रेखा शर्मा, कुसुम पुजारी, जयशंकर पुजारी, रमेश सोनी द्वारकाप्रसाद ने अपने अपने विचार रखें।

गणपत लाल सैनी समर्थपुरा बने प्रदेश उपाध्यक्ष

भीम प्रज्ञा न्यूज़.लक्ष्मणगढ़।

सूर्यवंशी क्षत्रिय महासभा रजि. राजस्थान के प्रदेश अध्यक्ष एडवोकेट डॉ. महेश कुमार सैनी ने संगठन का विस्तार करते हुए सीकर नगर परिषद पूर्व सभापति प्रतिनिधि गणपत लाल सैनी समर्थपुरा को राजस्थान प्रदेश उपाध्यक्ष नियुक्त किया है। यह नियुक्ति पत्रकार सुभाष चौबदार प्रदेश मिडिया प्रभारी राजस्थान की अनुशंसा पर की गई। उक्त नियुक्ति सैनी के सामाजिक कार्यों के प्रति समर्पण को देखते हुए सूर्यवंशी क्षत्रिय महासभा राजस्थान की कार्यकारणी में अगले दो साल के लिए की है। तथा आशा व्यक्त की है कि राष्ट्रहित और समाज हित में ईमानदारी से कार्य करेंगे। प्रदेश उपाध्यक्ष की नियुक्ति पर संगठन के पदाधिकारियों, शुभचिंतकों , सहयोगियों व समर्थकों ने प्रसन्नता जाहिर करते हुए बधाई दी है।

खेतड़ी में युवा ऊर्जा संगम, युवा दिवस पर होनहार खिलाड़ियों का सम्मान

भीम प्रज्ञा न्यूज़.बुहाना।

सोमवार को युवा दिवस के अवसर पर स्वामी विवेकानंद म्यूजियम, खेतड़ी में युवा ऊर्जा संगम का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनिया रहे। कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं को प्रेरित करना तथा खेल व शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभावान विद्यार्थियों को सम्मानित करना रहा।इस अवसर पर बाबा उमद सिंह महाविद्यालय, बुहाना के छात्र हेमंत सिंह पुत्र जोगेंद्र सिंह को कबड्डी में पदक प्राप्त करने पर, छात्रा साक्षी तंवर पुत्री वीरेंद्र सिंह को विश्वविद्यालय स्तर पर बाधा दौड़ में स्वर्ण पदक प्राप्त करने पर तथा छात्र मनीष को 400 मीटर दौड़ में स्वर्ण पदक हासिल करने पर सम्मानित किया गया। इन तीनों होनहार खिलाड़ियों ने महाविद्यालय के साथ-साथ क्षेत्र का नाम रोशन किया। समारोह में किसान मोर्चा भाजपा झुंझुनूं के जिला अध्यक्ष एवं बाबा उमद सिंह महाविद्यालय के निदेशक रतन सिंह तंवर को भी उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया। इसके पश्चात बाबा उमद सिंह महाविद्यालय परिसर में भी इन तीनों छात्र-छात्राओं का अभिनंदन किया गया। इस मौके पर महाविद्यालय के प्राचार्य राजेश कुमार रांगेय, दिनेश शर्मा, विजय सिंह, सुनील कुमार, जोगेंद्र सिंह, कुलदीप सिंह सहित समस्त स्टाफ व बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री के नेतृत्व में राजस्थान बना एआई नवाचार का उभरता केंद्र - पूरण मल

राजस्थान रीजनल एआई इम्पैक्ट कॉन्फ्रेंस भारत के समावेशी और सतत एआई विकास की मजबूत नींव

भीम प्रज्ञा न्यूज़.सीकर।

राजस्थान ने .त्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के क्षेत्र में राष्ट्रीय विजन को साकार करने की दिशा में एक और ठोस कदम बढ़ाया है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राजस्थान एआई नवाचार के उभरते केंद्र के रूप में पहचान बना रहा है। पूरण मल सहायक निदेशक सीकर ने बताया कि राजस्थान क्षेत्रीय एआई इम्पैक्ट कॉन्फ्रेंस के माध्यम से मुख्यमंत्री ने यह स्पष्ट संदेश दिया कि तकनीक-आधारित विकास, समावेशी प्रगति और जनकल्याण के लिए एआई का उपयोग सरकार की प्रमुख प्राथमिकताओं में शामिल है। यह सम्मेलन भारत एआई इम्पैक्ट समिट- 2026 की तैयारी के क्रम में एक महत्वपूर्ण क्षेत्रीय पड़ाव सिद्ध हुआ। सम्मेलन में संस्थागत सहयोग को नई ऊंचाई देते हुए गूगल, आईआईटी दिल्ली, राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, जोधपुर तथा स्किल डेवलपमेंट नेटवर्क (वाधवानी फाउंडेशन) के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इस बहुपक्षीय साझेदारी का उद्देश्य एआई अनुसंधान, बड़े पैमाने पर कौशल विकास, नैतिक एवं कानूनी ढांचे तथा नवाचार-आधारित इकोसिस्टम को मजबूत करना है, जिससे युवाओं के लिए नए अवसर सृजित होंगे और राज्य की डिजिटल क्षमताओं में वृद्धि होगी। मीणा ने बताया कि उच्चस्तरीय रणनीतिक सत्र में अभिषेक सिंह, अतिरिक्त सचिव, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, सीईओ. इंडिया एआई मिशन एवं महानिदेशक. एनआईसी ने विशाल धूपर, मैनेजिंग डायरेक्टर. साउथ एशिया, एनवीडिया के साथ संवाद किया।

सत्र का संचालन समीर जैन, मैनेजिंग डायरेक्टर, प्राइमस पार्टनर्स ने किया। चर्चा में एआई अवसंरचना के लोकतंत्रीकरण, सार्वजनिकद. निजी भागीदारी को सुदर्ढ करने, नवाचार को व्यापक स्तर पर सक्षम बनाने तथा सुरक्षित और भरोसेमंद एआई के लिए सार्वजनिक क्षेत्र की क्षमता निर्माण जैसे विषयों पर विचार-विमर्श हुआ। इंडियाएआई मिशन की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कविता भाटिया, वैज्ञानिक 'जी', समूह समन्वयक, एमीटी एवं सीओओ इंडियाएआई मिशन ने भारत एआई इम्पैक्ट समिट 2026 की ष्टि और प्राथमिकताओं को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि नीति, अवसंरचना और मानव संसाधन विकास के समन्वित प्रयासों से एआई को जनकल्याण से जोड़ा जा रहा है। वैश्विक एआई, राष्ट्रीय एआई और क्षेत्रीय एआई विषय पर अविनाश शर्मा, प्रोफेसर, आईआईटी जोधपुर ने क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थानों की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्थानीय संदर्भों को समझने वाले समाधान ही वैश्विक स्तर पर प्रभावी सिद्ध होते हैं। सम्मेलन के दौरान शासन, अवसंरचना, नवाचार, नैतिकता और रोजगार जैसे विषयों पर समानांतर सत्र आयोजित किए गए, जिनमें एआई के व्यावहारिक अनुप्रयोगों और जनसेवा में इसके उपयोग पर चर्चा राजस्थान के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के नेतृत्व में राजस्थान सरकार की यह पहल हुई। राज्य को एआई आधारित नवाचार, कौशल विकास और सतत विकास का अग्रणी केंद्र बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। राजस्थान क्षेत्रीय एआई इम्पैक्ट कॉन्फ्रेंस ने यह सिद्ध किया कि राज्य तकनीक को जनहित से जोड़ते हुए भारत के एआई भविष्य में सक्रिय और प्रभावी भूमिका निभाने के लिए पूर्णतः प्रतिबद्ध है।

टोहाना के कांग्रेसी विधायक के भाई ने नगर परिषद टोहाना का 12 करोड़ बकाया आज तक नहीं भरा, अदालत जाने की तैयारी-चैयरमेन नरेश बंसल

सन् 2012में24एकड़ में टोहाना के डांगरा रोड़ पर संतोख कालोनी के नाम से काटी थी रिहायशी कालोनी

हुड्डा की सरकार में भाई के मंत्री रहते कुल टैक्स का केवल 25प्रतिशत भर पास करवाई थी कालोनी, बकाया अब तक खड़ा है

भीम प्रज्ञा न्यूज़.टोहाना।

विजय रंगा(ब्यूरो चीफ) । कांग्रेस विधायक के भाई की कॉलोनी पर 12 करोड़ रुपए का टैक्स बकाया है। इस बकाया टैक्स को जमा करवाने के लिए 15 से अधिक नोटिस भेजे गए हैं। मगर अभी तक टैक्स की अदायगी नहीं की गई है। इसका खुलासा टोहाना नगर परिषद के चेयरमैन नरेश बंसल ने किया है । बंसल के अनुसार, टोहाना से मौजूदा कांग्रेस विधायक और पूर्व कृषि मंत्री सरदार परमवीर सिंह के भाई रणधीर सिंह के नाम रजिस्टर्ड संतोख कॉलोनी पर यह करीब 12 करोड़ रुपए का टैक्स बाकी पड़ा है। चेयरमैन का दावा है कि इस कॉलोनी में खुद विधायक भी पार्टनर हैं। रणधीर सिंह कांग्रेस के जिलाध्यक्ष भी रह चुके हैं। बता दें कि, इन दिनों पूर्व पंचायत मंत्री देवेंद्र बबली और पूर्व कृषि मंत्री परमवीर सिंह के बीच बयानबाजी चल रही है। देवेंद्र बबली ने परमवीर सिंह को टोहाना हलके और परिवार पर बोझ बता दिया था। वहीं, परमवीर सिंह ने पलटवार करते हुए देवेंद्र बबली पर तालाबों की खुदाई के नाम पर ठेकेदारों को फायदा पहुंचाने का आरोप लगाया था। चेयरमैन नरेश बंसल ने बताया कि टोहाना में साल 2012 में डांगरा रोड पर संतोख कॉलोनी बनाई गई थी। यह कॉलोनी सवा 24 एकड़ में फैली है। यह टीपी स्कीम के तहत पास करवाई गई । उस समय तत्कालीन सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा की सरकार में टोहाना से विधायक परमवीर सिंह कृषि मंत्री हुआ करते थे। इस कॉलोनी का कुल 16 करोड़ 75 लाख रुपए टैक्स बनता है । मगर उस समय सिर्फ 25 फीसदी पैसा यानी 4 करोड़ 18 लाख रुपए जमा करवाए गए थे। आज तक बाकी पैसा बकाया पड़ा है।

भारतीय जनता पार्टी फतेहाबाद जिला स्तर पर मनाएगी लोहड़ी महोत्सव

लोहड़ी महोत्सव का पूरा कार्यक्रम ओबीसी मोर्चा के संयोजन में होगा-ओबीसी जिला प्रधान बलदेव सैनी

भीम प्रज्ञा न्यूज़.टोहाना।

रजत विजय रंगा । भारतीय जनता पार्टी फतेहाबाद द्वारा जिला स्तर पर लोहड़ी महोत्सव का भव्य आयोजन किया जाएगा। यह कार्यक्रम ओबीसी मोर्चा के संयोजन में आयोजित होगा। कार्यक्रम के मुख्यातिथि भाजपा जिलाध्यक्ष प्रवीण जोड़ा होंगे। कार्यक्रम के अध्यक्ष ओबीसी मोर्चा के जिलाध्यक्ष बलदेव सैनी ने बताया कि महोत्सव में स्कूली छात्र-छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे, जिससे कार्यक्रम में उत्सव और उल्लास का माहौल बनेगा। उन्होंने बताया कि इस महोत्सव के मौके पूर्व सांसद सुनीता दुग्गल, पूर्व मंत्री देवेंद्र बबली, पूर्व विधायक धुडा राम, भारतभूषण मिढा, राजपाल बैनिबाल, ओबीसी मोर्चा के जिला प्रभारी रत्न सैनी, जिला प्रभारी भाजपा सुरेंद्र आर्य सहित पार्टी के सभी कनिष्ठ व वरिष्ठ पदाधिकारी, जिला कार्यकारिणी सदस्य, विभिन्न मोर्चों के अध्यक्ष एवं चेयरमैन , मण्डल अध्यक्ष के साथ साथ सभी कार्यकर्ताओं को भी आमंत्रित किया गया है। जो विशेष रूप से शिरकत करेंगे। सैनी ने बताया कि लोहड़ी महोत्सव के माध्यम से सामाजिक समरसता, लोक संस्कृति और परंपराओं को बढ़ावा दिया जाएगा तथा कार्यकर्ताओं में उत्साह का संचार किया जाएगा।

सीआईए टीम टोहाना की बड़ी कार्रवाई-9.21 ग्राम हेरोइन (चिट्टा) सहित आरोपी व मुख्य सप्लायर गिरफ्तार

नशा तस्करी के खिलाफ विशेष अभियान के तहत कार्रवाई

भीम प्रज्ञा न्यूज़.टोहाना।

रजत विजय रंगा । पुलिस अधीक्षक सिद्धान्त जैन, आईपीएस के दिशा-निर्देशन में नशा तस्करी के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत अपराध जांच शाखा (सीआईए) टोहाना ने बड़ी सफलता हासिल करते हुए एक आरोपी को 9.21 ग्राम हेरोइन (चिट्टा) सहित गिरफ्तार किया है। मामले में पूछताछ के दौरान मुख्य सप्लायर को भी गिरफ्तार कर लिया गया है। अपराध जांच शाखा टोहाना प्रभारी उप निरीक्षक अशोक कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि स्क्व जग्गा सिंह के नेतृत्व में पुलिस टीम गश्त व अपराध रोकथाम ड्यूटी पर थी। इसी दौरान पुलिस को विश्वसनीय सूचना प्राप्त हुई कि सन्नी पुत्र लखबीर सिंह, निवासी नन्हेही, जिला फतेहाबाद गांव-गांव घूमकर हेरोइन (चिट्टा) बेचने का काम करता है और आज गांव जाब्ता खेड़ा रोड, बस अड्डा के पास नशीला पदार्थ बेचने के लिए मौजूद है। सूचना के आधार पर पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर आरोपी को काबू किया। तलाशी के दौरान आरोपी की पहनी हुई जींस पैंट की दाहिनी जेब से एक पारदर्शी मोमी पाउच में 9.21 ग्राम हेरोइन (चिट्टा) बरामद की गई। इस संबंध में थाना सदर टोहाना में आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट की धारा 21-बी, 61 व 85 के तहत मुकदमा नंबर 08 दिनांक 11.01.2026 दर्ज कर उसे गिरफ्तार किया गया। आरोपी से की गई पूछताछ के आधार पर अभियोग में मुख्य सप्लायर कुलदीप पुत्र जोगिन्द्र, निवासी वार्ड नंबर 02, राज नगर, टोहाना को भी गिरफ्तार कर लिया गया है। मामले की आगामी जांच जारी है तथा नशा तस्करी से जुड़े अन्य संपर्कों और नेटवर्क की भी गहनता से जांच की जा रही है।पुलिस ने स्पष्ट किया है कि नशा तस्करों के खिलाफ सख्त कार्रवाई आगे भी लगातार जारी रहेगी।

समाधान शिविर में नागरिकों की शिकायतों का किया जा रहा निस्तारण- एसडीएम

भीम प्रज्ञा न्यूज़.टोहाना।

रजत विजय रंगा । एसडीएम आकाश शर्मा ने कहा कि नागरिकों की समस्याओं का समयबद्ध समाधान सुनिश्चित करना प्रशासन की प्राथमिक जिम्मेदारी है। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के दिशा-निर्देशों के अनुरूप जिला एवं उपमंडल स्तर पर समाधान शिविरों का आयोजन किया जा रहा है, ताकि आमजन को अपनी शिकायतों के समाधान के लिए कार्यालयों के चक्कर न लगाने पड़ें। एसडीएम आकाश शर्मा ने सोमवार को लघु सचिवालय स्थित अपने कार्यालय में आयोजित उपमंडल स्तरीय समाधान शिविर में उपस्थित नागरिकों की समस्याएं सुनीं तथा संबंधित विभागों के अधिकारियों को मामलों का शीघ्र निपटारा करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रशासन यह सुनिश्चित कर रहा है कि सभी पात्र नागरिकों को सरकारी योजनाओं का लाभ समय पर प्राप्त हो। विभिन्न विभागों को निर्देश दिए गए हैं कि प्राप्त शिकायतों की गंभीरता से जांच कर निर्धारित समय-सीमा में समाधान किया जाए, ताकि किसी भी नागरिक को अनावश्यक परेशानी न हो। एसडीएम ने बताया कि समाधान शिविर में परिवार पहचान पत्र आईडी में आय संबंधी संशोधन, नए सदस्यों का पंजीकरण, राशन कार्ड, बिजली विभाग एवं पुलिस विभाग से जुड़ी शिकायतें प्राप्त हुई हैं। इन सभी मामलों को संबंधित विभागों को सौंपते हुए आवश्यक कार्रवाई के निर्देश जारी किए गए हैं, जिससे नागरिकों को शीघ्र राहत मिल सके। उन्होंने बताया कि समाधान शिविर प्रशासन और नागरिकों के बीच सीधा संवाद स्थापित करने का माध्यम है, जिसके माध्यम से विभिन्न विभागों से संबंधित समस्याओं का मौके पर ही निस्तारण किया जा रहा है। एसडीएम ने आमजन से आग्रह किया कि वे अपनी किसी भी समस्या के समाधान के लिए समाधान शिविर में उपस्थित होकर अपनी शिकायत दर्ज कराएं। उन्होंने बताया कि प्रत्येक सोमवार और वीरवार को प्रातः 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक समाधान शिविर आयोजित किया जा रहा है, जिसमें जनता की समस्याएं सुनी जाती हैं।

फतेहाबाद जिले की भुना पुलिस की बडी कार्यवाही-विदेश भेजने के नाम पर लाखों रुपये की ठगी करने के मामले में एक अन्य सहआरोपी एयरपोर्ट से काबू

विदेश से आने की सुचना प्राप्त होने पर आरोपी को आईजीआई एयरपोर्ट पर किया गिरफ्तार

भीम प्रज्ञा न्यूज़.फतेहाबाद/भुना।

रजत विजय रंगा । पुलिस अधीक्षक सिद्धान्त जैन, आईपीएस के दिशा-निर्देशन में विदेश भेजने के नाम पर की गई ठगी के एक मामले में थाना भुना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए एक अन्य सहआरोपी को गिरफ्तार किया है। थाना भुना प्रभारी उप निरीक्षक ओमप्रकाश ने जानकारी देते हुए बताया कि शिकायतकर्ता अरशदीप सिंह, निवासी गांव मोहम्मदपुर सौत्र, तहसील रतिया, जिला फतेहाबाद ने आरोप लगाया था कि जगजीत सिंह व साहब सिंह सहित अन्य व्यक्तियों ने उसे और उसके रिश्तेदार को अमेरिका भेजने का झांसा देकर 15-15 लाख रुपये नकद ठग लिए। शिकायत के अनुसार आरोपियों ने खुद को विदेश भेजने का एजेंट बताते हुए पीड़ितों को अलग-अलग देशों में भेजा, लेकिन न तो अमेरिका भेजा गया और न ही ली गई राशि वापस की गई। बाद में पीड़ितों को पैसे मांगने पर धमकियां भी दी गईं। मामले की जांच के उपरांत थाना भुना में धारा 316(2), 318(4), 61(2) BNS के तहत मुकदमा 138/2025 दर्ज किया गया। पुलिस द्वारा पहले एक आरोपी जगजीत सिंह को गिरफ्तार किया जा चुका है। अब इसी मामले में साहब सिंह पुत्र लाभ सिंह, निवासी रामथली, जिला कैथल को विदेश से आने की सुचना एयरपोर्ट अथोरिटी से प्राप्त होने पर पुलिस टीम द्वारा आईजीआई एयरपोर्ट पर ही गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने बताया कि मामले की गहन जांच जारी है ।दोषियों के खिलाफ कानून के अनुसार सख्त कार्रवाई की जाएगी।

डब्ल्यूपीएल फैंस को लगा बड़ा झटका ! नवी मुंबई चुनाव के कारण बिना दर्शकों के खेले जाएंगे 3 बड़े मैच?

नवी मुंबई (एजेंसी)। नवी मुंबई नगर निगम चुनाव के चलते 15 जनवरी को डी वाई पाटिल स्पोर्ट्स अकादमी में होने वाली महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) के दर्शकों के बिना खेले जाने की संभावना है। ESPNcricinfo के अनुसार, पुलिस ने भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) को सूचित किया है कि डब्ल्यूपीएल और चुनाव के बीच होने वाले टकराव के दिन क्रिकेट के लिए पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था करना संभव नहीं होगा।

यह अभी भी अनिश्चित है कि 14 और 16 जनवरी को होने वाले मैच भी दर्शकों के बिना खेले जाएंगे या नहीं। डब्ल्यूपीएल के आधिकारिक ऑनलाइन टिकट प्लेटफॉर्म पर 14, 15 और 16 जनवरी के मैचों के टिकट उपलब्ध नहीं हैं, जिससे संभवतः निम्नलिखित मैच प्रभावित होंगे- 14 जनवरी को दिल्ली कैपिटल्स बनाम यूपी वॉरियर्स, 15 जनवरी को मुंबई इंडियंस बनाम यूपी वॉरियर्स और 16 जनवरी को गुजरात जायंट्स बनाम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु।

ये मैच नवी मुंबई स्थित डीवाई पाटिल स्पोर्ट्स अकादमी में खेले जाएंगे। 17 जनवरी को डीवाई पाटिल स्टेडियम में होने वाले दो मैचों (एमआई बनाम यूपीडब्ल्यू और डीसी बनाम आरसीबी) के टिकट बिक रहे हैं। इसके बाद लीग शेष सीजन के लिए वडोदरा में स्थानांतरित हो जाएगी। शुक्रवार को डब्ल्यूपीएल के पहले मैच में लगभग सभी स्टेडियम खचाखच भरे हुए थे, और सप्ताहांत में खेले गए दोनों मैचों में भी अच्छी खासी भीड़ देखी गई। फिलहाल, गुजरात जायंट्स 2 जीत के साथ डब्ल्यूपीएल तालिका में शीर्ष पर है, जबकि मौजूदा चैंपियन मुंबई इंडियंस दूसरे स्थान पर है।

अब तमिलनाडु और केरल में बांग्लादेश के मैच आयोजित कर सकता है आईसीसी

कुआलालम्पुर (एजेंसी)। दुबई (ईएमएस)। बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी) ने आईसीसी टी20 विश्व कप 2026 के लिए अपने मैच भारत से बाहर कराने की मांग की है। बीसीबी ने कहा है कि वह सुरक्षा कारणों से भारत में अपनी टीम नहीं भेज सकता। इसलिए उसके मैच श्रीलंका में कराये जायें। वहीं अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) इसके लिए तैयार नहीं है। विश्व कप में अब काफी कम समय है। जिसको देखते हुए आईसीसी चाहता है कि बांग्लादेश के मैच भारत में ही कराये जाये पर मैच स्थल बदल दिये जाये। इसी को देखते हुए आईसीसी वैकल्पिक स्थलों के तौर पर तमिलनाडु और केरल में मैच रखना चाहता है। इसी को देखते हुए उसने क्रिकेट संघ और केरल क्रिकेट संघ से भी संपर्क किया है, जिससे बांग्लादेश के मैचों को चेन्नई और तिरुवनंतपुरम में स्थानांतरित किया जाये।

वहीं एक रिपोर्ट के अनुसार तमिलनाडु क्रिकेट संघ (टीएनसीए) और केरल क्रिकेट संघ (केसीए) भी बांग्लादेश के मैचों को कराने के लिए तैयार है। चेन्नई के चेपॉक स्टेडियम में पहले से ही 7 मैच होने हैं। टीएनसीए के अनुसार उनके पास 8 पिचें हैं, इसलिए उन्हें बांग्लादेश के मैचों की मेजबानी में कोई परेशानी नहीं होगी। वहीं केरल क्रिकेट संघ ने भी कहा है कि वह बांग्लादेश के मैचों के लिए तैयार है। वहीं हाल ही में पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने भी आईसीसी के सामने प्रस्ताव रखा कि अगर बांग्लादेशी टीम भारत नहीं जाती है तो इन मैचों की मेजबानी के लिए पीसीबी तैयार है। गौरतलब है कि टी20 विश्व कप 2026 में बांग्लादेश को भारत में चार लीग मैच खेलने हैं। इसमें से तीन मैच कोलकाता के ईडन गार्डन्स स्टेडियम में खेले गये हैं जबकि जबकि एक लीग मैच मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में रखा गया है। टी20 विश्व कप के वेन्यू को लेकर ये पूरा विवाद बांग्लादेशी खिलाड़ी मुस्ताफिजुर रहमान को आईपीएल 2026 से बाहर किये जाने से शुरु हुआ। इसके बाद से ही बांग्लादेश बोर्ड ने कहा कि वह सुरक्षा कारणों से अपनी टीम भारत नहीं भेजेगा।

सुंदर की जगह आयुष बडोनी बचे हुए दो एकदिवसीय मैचों के लिए भारतीय टीम में शामिल

मुम्बई (एजेंसी)। दिल्ली के युवा बल्लेबाज आयुष बडोनी को पहली बार भारतीय टीम में जगह मिली है। बडोनी को ऑलराउंडर वाशिंगटन सुंदर की जगह पर न्यूजीलैंड के खिलाफ बचे हुए दो एकदिवसीय मैचों के लिए भारतीय क्रिकेट टीम में शामिल किया गया है। बडोनी ने पिछले कुछ समय में दिल्ली की ओर से घरेलू क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन किया था। वहीं ऑलराउंडर सुंदर न्यूजीलैंड के खिलाफ पहले एकदिवसीय मैच में चोटिल होने के कारण सीरीज से बाहर हो गये हैं। बडोनी के चयन से साफ है कि प्रबंधन घरेलू क्रिकेट और आईपीएल में अच्छे प्रदर्शन को कितना महत्व देता है। सुंदर को पहले एकदिवसीय में क्षेत्ररक्षण करते समय बाईं निचली में चोट लग गयी थी। इसी कारण उन्हें मैदान से बाहर जाना पड़ा था। वह हालांकि बल्लेबाजी के लिए लौटे पर सहज नहीं दिखे। जांच में उनकी चोट गंभीर पायी गयी है।

वहीं पहली बार टीम में शामिल 26 साल के बडोनी घरेलू क्रिकेट और आईपीएल में अपने शांत स्वभाव और मैच फिनिश करने की क्षमता के लिए जाने जाते हैं। वह अब राजकोट में टीम से जुड़ेंगे, जहां दूसरा वनडे खेला जाना है।

भारतीय टीम इस प्रकार है: शुभमन गिल (कप्तान), रोहित शर्मा, विराट कोहली, केएल राहुल (विकेटकीपर), श्रेयस अय्यर (उपकप्तान), रवींद्र जडेजा, मोहम्मद सिराज, हर्षित राणा, प्रसिद्ध कृष्णा, कुलदीप यादव, नितीश कुमार रेड्डी, अर्शदीप सिंह, यशस्वी जयसवाल, ध्रुव जुरेल (विकेटकीपर), आयुष बदोनी।

रोहित एकदिवसीय में सबसे ज्यादा छक्के लगाने वाले खिलाड़ी बने, गेल को पीछे छोड़ा

वडोदरा (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के अनुभवी सलामी बल्लेबाज रोहित शर्मा ने न्यूजीलैंड के खिलाफ यहां पहले ही एकदिवसीय क्रिकेट मैच में दो छक्के लगाते ही एक बड़ा रिकार्ड अपने नाम कर लिया। अब रोहित एकदिवसीय में सबसे अधिक 329 छक्के लगाने वाले खिलाड़ी बन गये हैं। इससे पहले ये रिकार्ड वेस्टइंडीज के विस्फोटक बल्लेबाज क्रिस गेल के नाम था, गेल ने 328 छक्के लगाये थे। पहले एकदिवसीय में भारतीय टीम ने 301 रनों का लक्ष्य हासिल करते हुए जीत दर्ज की थी। रोहित ने इस मैच में पहले और दूसरे ओवर में दो छक्के लगाकर अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अपने 650 छक्के भी पूरे किये। ये उपलब्धि हासिल करने वाले वह पहले खिलाड़ी हैं। रोहित हालांकि बड़ी पारी नहीं खेल पाये और 9वें ओवर में काइल जैमीसन की गेंद पर पेवेलियन लौट गए। उन्होंने 29 गेंदों में तीन चौके और दो छक्के लगाकर 26 रन बनाए। रोहित के नाम अब एकदिवसीय में सलामी बल्लेबाज के तौर पर 329 छक्के हो गये हैं। वहीं दूसरे नंबर पर खिसके गेल को पीछे छोड़ दिया है, जिनके नाम 328 छक्के हैं। वहीं गत वर्ष उन्होंने एकदिवसीय में सबसे ज्यादा छक्कों का शाहिद अफरीदी का रिकॉर्ड भी तोड़ा था।

सोफी डब्ल्यूपीएल में एक ही ओवर में सबसे अधिक रन बनाने वाली खिलाड़ी बनीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। गुजरात जायंट्स की सलामी बल्लेबाज सोफी डिवाइन ने महिला प्रीमियर लीग क्रिकेट (डब्ल्यूपीएल) 2026 में दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ के चौथे मुकाबले में एक ही ओवर में चार छक्के और दो चौके लगाकर 32 रन बनाने के साथ ही एक अहम उपलब्धि अपने नाम की है। इसी के साथ ही सोफी डब्ल्यूपीएल में एक ओवर में सबसे अधिक रन बनाने वाली खिलाड़ी बन गयी हैं। उन्होंने इस ओवर में कुल 32 रन बनाये इससे ये लीग का सबसे महंगा ओवर बन गया है। इस मैच में गुजरात जायंट्स ने पहले बल्लेबाजी करते हुए बेथ मूनी और सोफी डिवाइन की आक्रामक बल्लेबाजी से अच्छी शुरुआत की।

सोफी ने केवल 25 गेंदों में ही अपने 50 रन पूरे कर लिए। ये लीग इतिहास का सबसे महंगा ओवर रहा है। वहीं इससे पहले दीप्ति शर्मा ने साल 2025 में यूपी वॉरियर्स की ओर से खेलते हुए आरसीबी के खिलाफ एक ही ओवर में 28 रन बनाये थे। वहीं एक ही ओवर में सबसे अधिक रन बनाने वाली तीसरी खिलाड़ी तनुजा कंवर हैं। तनुजा ने , साल 2023 में गुजरात जायंट्स की ओर से खेलते हुए आरसीबी के खिलाफ एक ही ओवर में 27 रन बनाये थे। इस मैच का पावरप्ले डब्ल्यूपीएल इतिहास का दूसरा सबसे महंगा पावरप्ले था। इससे पहले साल 2023 में दिल्ली कैपिटल्स ने गुजरात जायंट्स के खिलाफ पावरप्ले में ही 87 रन बना दिये थे।

टीम प्रबंधन चाहता है कि मैं गेंदबाजी साथ ही बल्लेबाजी पर भी ध्यान दूं : हर्षित राणा

वडोदरा । यहां न्यूजीलैंड के खिलाफ हुए पहले एकदिवसीय मैच में हर्षित राणा ने अच्छी बल्लेबाजी और गेंदबाजी कर अपने चयन को सही साबित किया है। हर्षित के इस प्रदर्शन से भारतीय टीम ने पहले एकदिवसीय में चार विकेट से जीत हासिल की थी। हर्षित के अनुसार टीम प्रबंधन ने उन्हें गेंदबाजी के साथ ही बल्लेबाजी का भी अभ्यास करने कहा है जिससे वह जरूरत पड़ने पर रन बना सकें। राणा ने कहा, प्रबंधन चाहता है कि वह एकदिवसीय में एक भरोसेमंद ऑलराउंडर के तौर पर उभरें। विकेट लेने के साथ ही वह निचले क्रम में भी कुछ रन बना सकें। साथ ही कहा कि अनुभवी खिलाड़ियों के इस प्रकार भरोसा करने से मेरा मनोबल भी बढ़ा है। राणा ने कहा, अब मेरा काम है कि मैं लगातार मेहनत करता रहूं। मैं नेट्स में बल्लेबाजी पर भी काफी काम कर रहा हूं। टीम की योजना मुझे नंबर आठ के आसपास बल्लेबाजी के लिए उतारना है।

कैरियर के अंतिम चरण में भी विराट में गजब का है जुनून : शास्त्री

वडोदरा । भारतीय टीम के पूर्व मुख्य कोच रवि शास्त्री ने अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली की जमकर प्रशंसा करते हुए कहा है कि वह करियर के अंतिम चरण में भी ऐसे खेल रहे हैं जैसे की शुरुआत में खेलते थे। उनके खेल में वही जुनून और गंभीरता व रनों की भूख दिखती है जो किसी खिलाड़ी के करियर की शुरुआत में देखी जाती है। उनकी फिटनेस और मैच में अपना सौ फीसदी योगदान देना अलग ही नजर आता है। शास्त्री ने कहा कि कोहली का तो ये रूटीन है और उन्होंने भारतीय के कप्तान शुभमन गिल को लेकर कहा कि वह अगला कोहली होगा। इस मैच में विराट और शुभमन की साझेदारी कमाल की रही। जब दोनों बल्लेबाजी कर रहे थे तभी कमेंटेटर ने पूछा, भारत के इस आधुनिक महान क्रिकेटर से नई पीढ़ी क्या सीख सकती है? इसी को देखते हुए शास्त्री ने विराट की जमकर प्रशंसा की। शास्त्री ने कहा, 'एक समय पर एक ही चीज पर ध्यान। जब मैं टीम के साथ कोच के तौर पर था तब मैंने देखा कि मेहनत में कोई उनसे आगे नहीं है। मैंने देखा है कि वह कैसे काम करते हैं। सुबह में कितने कैच पकड़ते हैं। आउटफील्ड में कैच फिर कीपर के ग्लव में थ्रो। उनकी बैटिंग और बाकी सारी चीजें, ये तो रूटीन है बस।' शास्त्री ने साथ ही कहा, 'विराट की तरह का पेशेवर रुख कसी योजना से नहीं आता। ये एक प्रणाली है। ये अंदर से क्रिकेट को जीने का तरीका है। अगर शुभमन को भी इसी रास्ते पर जाना है तो उन्हें इससे अच्छी तरह देखना होगा।

आकाश चोपड़ा ने पहले मैच के बाद इस खिलाड़ी की तारीफ की, धोनी से की तुलना

मुंबई (एजेंसी)। पूर्व भारतीय क्रिकेटर आकाश चोपड़ा ने रविवार को वडोदरा के कोटांबी में BCA स्टेडियम में न्यूजीलैंड के खिलाफ तीन मैचों की वनडे सीरीज के पहले मैच में भारत की 4 विकेट से जीत में अहम भूमिका निभाने वाली केएल राहुल की नाबाद 29 रन की पारी के बाद उनकी बहुमुखी प्रतिभा और फिनिशिंग क्षमता की तारीफ की। 301 रनों का पीछा करते हुए भारत मुश्किल में पड़ गया था जब उसका स्कोर 242/5 हो गया था, तब भारतीय ऑलराउंडर हर्षित राणा क्रीज पर केएल राहुल के साथ आए।

राहुल ने सावधानी से खेलते हुए राणा के साथ 37 रनों की साझेदारी की जिसमें ऑलराउंडर ने ज्यादातर रन बनाए जबकि राहुल ने यह सुनिश्चित किया कि न्यूजीलैंड को उनका विकेट न मिले क्योंकि इससे विपक्षी टीम को भारतीय निचले क्रम तक पहुंचने का मौका मिल जाता। राणा के विकेट के बाद राहुल ने वाशिंगटन सुंदर के साथ 27 रनों की साझेदारी की जिसमें ज्यादातर रन उन्होंने खुद बनाए।

राहुल ने 49वें ओवर तक बड़े शॉट खेलने से परहेज किया। जब भारत को आखिरी 12 गेंदों में 12 रनों की जरूरत थी, तो राहुल ने तेजी दिखाई और लगातार चौके लगाए और फिर आखिरी ओवर की आखिरी तीन गेंदों में एक छक्का लगाकर टीम इंडिया को जीत दिलाई। जियोस्टार पर बोलते हुए आकाश चोपड़ा ने केएल राहुल की शांत और समझदारी भरी पारी की तारीफ की, उनकी बहुमुखी प्रतिभा, लक्ष्य का पीछा करने की गति और दबाव में शांत रहने की क्षमता पर प्रकाश डाला। उन्होंने डेथ ओवरों में राहुल के नियंत्रण की तुलना एमएस धोनी से की और फिनिशर की भूमिका में बेहतरीन प्रदर्शन के लिए उनकी तारीफ की।

चोपड़ा ने कहा, 'न्यूजीलैंड के खिलाफ इस पहले वनडे में केएल राहुल का बैटिंग का तरीका दिलचस्प था। हम उन्हें एक आक्रामक खिलाड़ी के तौर पर जानते हैं। लेकिन यहां हर्षित राणा और चोटिल वॉशिंगटन सुंदर के साथ बैटिंग करते हुए वह अलग थे। कई बार आपको लगता है कि वह तेजी से रन बनाएंगे और बड़े शॉट लगाकर मैच जल्दी खत्म कर देंगे, लेकिन उन्होंने अपना समय लिया। 49वें ओवर में उन्होंने जो पहली गेंद मारी वह बाउंड्री वाली गेंद नहीं थी, लेकिन उन्होंने बाउंड्री लगा दी। उनमें आसानी से बाउंड्री ढूंढने की काबिलियत है और वह जब चाहते हैं तब शॉट मारते हैं।'

उन्होंने आगे कहा, 'वह उन गेंदों पर सिंगल ले रहे थे जिन पर वह आमतौर पर शॉट मारते हैं, लेकिन उन्होंने सही मौकों का इंतजार किया। एक अलग तरीके से उनकी वर्सेटिलिटी ही उनकी सबसे बड़ी खूबी है। उनसे ओपनिंग करने को कहो, विकेटकीपिंग करने को कहो, या स्टैंड-इन कप्तान बनने को कहो, वह सब करेंगे। उन्होंने बस अभी तक बॉलिंग नहीं की है, वह बाकी है। इन डेथ ओवर्स में चेज को इतनी अच्छी तरह से कंट्रोल करना, धोनी की तरह नर्व्स को कंट्रोल करना, केएल राहुल को सलाम। वह मॉडर्न क्रिकेट की सबसे मुश्किल भूमिका फिनिशर में बेहतरीन प्रदर्शन कर रहे हैं।'

बार्सिलोना ने रियाल मैड्रिड को हराकर फिर से जीता स्पेनिश सुपर कप

जेद्दा । राफिन्हा के दो गोल की मदद से बार्सिलोना ने सऊदी अरब में खेले गए स्पेनिश सुपर कप फुटबॉल टूर्नामेंट के फाइनल में रियल मैड्रिड को 3-2 से हराया। राफिन्हा का 73वें मिनट में किया गया विजयी गोल संयोगवश आया, जब शॉट मारते समय वह फिसल गए और गेंद मैड्रिड के डिफेंडर राउल असेंसियो से टकराकर गोलकीपर थिबाउट कर्टोइस को चकमा दे गई। फाइनल के पहले हाफ का अंत बेहद रोमांचक रहा, जब ब्रेक से पहले स्टॉपेज टाइम में तीन गोल हुए, जिनमें से दो रियाल मैड्रिड ने और एक बार्सिलोना ने किया। पिछले साल के फाइनल में भी बार्सिलोना ने रियाल मैड्रिड को 5-2 से हराया था, जिसमें राफिन्हा ने दो गोल किए थे। बार्सिलोना ने 16वां सुपर कप खिताब जीता, जो किसी भी अन्य क्लब से अधिक है। रियाल मैड्रिड 13 खिताब के साथ दूसरे स्थान पर है। घुटने की चोट के कारण मिनी-सुपर कप टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में नहीं खेल पाए काइलियन एमबाप्पे 76वें मिनट में मैदान पर उतरे, लेकिन रियाल मैड्रिड को बराबरी दिलाने में नाकाम रहे। बार्सिलोना ने 36वें मिनट में राफिन्हा के शानदार गोल से बढ़त बनाई। उसके लिए रॉबर्ट लेवांडोस्की ने भी गोल किया। रियाल मैड्रिड के लिए विनीसियस जूनियर और गोंजालो गार्सिया ने गोल किए।

शिखर धवन ने अपनी गर्लफ्रेंड सोफी शाइन से की सगाई

नई दिल्ली। भारत के पूर्व सलामी बल्लेबाज शिखर धवन ने सोशल मीडिया मंच इंस्टाग्राम पर अपनी गर्लफ्रेंड सोफी शाइन से सगाई करने की घोषणा की। धवन के फॉलोअर्स ने इस खबर का गर्मजोशी से स्वागत किया है, कई लोगों ने खुशी जताई और कहा कि इस साल कपल की शादी को लेकर पहले से ही अटकलें लगाई जा रही थीं। शिखर धवन ने आज इंस्टाग्राम पोस्ट में लिखा, 'एक जैसी मुस्कान से लेकर एक जैसे सपने। हमारी सगाई के लिए मिले प्यार, आशीर्वाद और हर शुभकामना के लिए शुक्रगुजार हूं, क्योंकि हमने हमेशा साथ रहने का फैसला किया है।' 35 साल की सोफी शाइन आयरिश नागरिक हैं और नॉर्दर्न ट्रस्ट कॉर्पोरेशन में प्रोडक्ट कंसल्टेंट के तौर पर काम करती हैं। वह फिलहाल अबू धाबी में रहती

अंडर-19 वर्ल्ड कप में इन रिकॉर्ड्स पर रहेगी भारतीय युवा स्टार वैभव सूर्यवंशी की नजर

नई दिल्ली (एजेंसी)। साउथ अफ्रीका के खिलाफ यूथ वनडे सीरीज़ में तूफानी प्रदर्शन कर चर्चा में आए वैभव सूर्यवंशी अब अंडर-19 वर्ल्ड कप में इतिहास रचने को तैयार हैं। 15 जनवरी से शुरू हो रहे इस मेगा टूर्नामेंट में भारत की युवा टीम यूएसए के खिलाफ अपने अभियान की शुरुआत करेगी। वैभव की बल्लेबाज़ी का अंदाज़ आक्रामक है और उनके आंकड़े बताते हैं कि वह जहां भी खेले हैं, बड़े स्कोर किए हैं। ऐसे में अंडर-19 वर्ल्ड कप में उनसे कई बड़े रिकॉर्ड टूटने की उम्मीद की जा रही है।

छक्कों का सबसे बड़ा रिकॉर्ड खतरे में

वैभव सूर्यवंशी की बल्लेबाज़ी की सबसे बड़ी पहचान उनकी बाउंड्री हिटिंग है। उनके कुल रनों का बड़ा हिस्सा चौकों और छक्कों से आता है। अंडर-19 वर्ल्ड कप के एक सीज़न में सबसे ज्यादा छक्कों का रिकॉर्ड फिलहाल साउथ अफ्रीका के डेवाल्ड ब्रेविस के नाम है, जिन्होंने 2022 में 18 छक्के लगाए थे। वैभव की आक्रामक शैली को देखते हुए माना जा रहा है कि यह रिकॉर्ड इस बार टूट सकता है।

स्ट्राइक रेट में नया कीर्तिमान संभव

अंडर-19 वर्ल्ड कप इतिहास में सर्वश्रेष्ठ स्ट्राइक रेट का रिकॉर्ड भारत के शिखर धवन के नाम है, जिन्होंने 2004 में 93.51 की स्ट्राइक रेट से बल्लेबाज़ी की थी। वैभव सूर्यवंशी आमतौर पर 150 से ऊपर की स्ट्राइक रेट से रन बनाते हैं। ऐसे में उनका यह आंकड़ा टूर्नामेंट में नया बेंचमार्क सेट कर सकता है और यह रिकॉर्ड भी इतिहास बन सकता है।

सबसे ज्यादा रन बनाने का भारतीय रिकॉर्ड

अंडर-19 वर्ल्ड कप में भारत की ओर से सबसे ज्यादा रन बनाने का रिकॉर्ड सरफराज खान के नाम दर्ज है, जिन्होंने 2014 से 2016 के बीच 566 रन बनाए थे। वैभव सूर्यवंशी की निरंतरता और बड़ी पारियां खेलने की आदत को देखते हुए यह रिकॉर्ड भी उनके निशाने पर है, खासकर अगर भारत टूर्नामेंट में आगे तक जाता है।

शतकों की संख्या में भी बदलाव संभव

इस टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा शतक लगाने का रिकॉर्ड फिलहाल जैक बर्नहैम और शिखर धवन के नाम है, दोनों ने तीन-तीन शतक लगाए हैं। वैभव सूर्यवंशी का शतक लगाने का ट्रैक रिकॉर्ड बेहद मजबूत रहा है। अगर वह अपने फॉर्म को बरकरार रखते हैं, तो शतकों की यह सूची भी बदल सकती है।

सबसे बड़े व्यक्तिगत स्कोर पर नजर

अंडर-19 वर्ल्ड कप में अब तक का सबसे बड़ा व्यक्तिगत स्कोर 191 रन का है, जो 2018 में हशिता बोयागोडा ने बनाया था। अब तक कोई भी बल्लेबाज़ इस टूर्नामेंट में दोहरा शतक नहीं लगा पाया है। वैभव सूर्यवंशी के पास न सिर्फ इस रिकॉर्ड को तोड़ने बल्कि इतिहास में पहला दोहरा शतक लगाने का भी सुनहरा मौका है।

ऑस्ट्रेलियाई ओपन में इस बार केवल युगल में ही उतरेंगे किर्गियोस

सिडनी । ऑस्ट्रेलियाई टेनिस स्टार निक किर्गियोस इस बार 18 जनवरी से शुरु हो रहे ऑस्ट्रेलियाई ओपन में केवल युगल मुकाबलों में ही उतरेंगे। किर्गियोस ने कहा है कि इस बार वह एकल में नहीं खेलेंगे। युगल में उनके जोड़ीदार हमवतन थानासी कोकिनाकिस रहेंगे। किर्गियोस ने सोशल मीडिया में लिखा, मैं इस साल केवल ऑस्ट्रेलियन ओपन युगल में ही इसलिए उतर रहा हूं क्योंकि मैं अपने शरीर पर अधिक दबाव नहीं देना चाहता हूं। यह टूर्नामेंट मेरे लिए सब कुछ है पर मैं अपनी जगह किसी ऐसे खिलाड़ी को अवसर देना चाहूंगा जो बेहतर प्रदर्शन कर सके। मैं अगले साल एकल में भी वापसी करुंगा। किर्गियोस ने फिट नहीं होने के कारण साल 2025 में केवल पांच मैच खेले थे। पिछले माह न्यूयॉर्क और दुबई में प्रदर्शनी मैचों की एक सीरीज के साथ ही उन्होंने प्रतियोगिता में वापसी की थी। किर्गियोस को पिछले कुछ समय में कई गंभीर चोटों का सामना करना पड़ा है। इससे उनके करियर पर काफी असर आया है। इससे उनकी रैंकिंग फिसलकर 673 पर आ गई है। वह साल 2022 के बाद से ही केवल एक ग्रैंड स्लैम मैच खेल पाये हैं। इसके बाद से ही घुटने और कलाई की सर्जरी के कारण उनको काफी समय तक खेल से बाहर रहना पड़ा था।

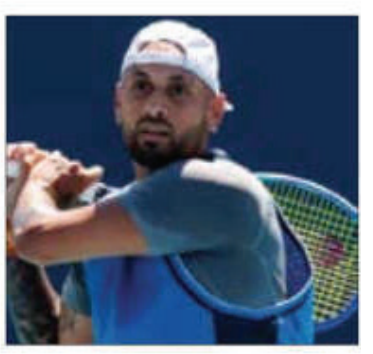

किसी भी अन्य जॉनर की तरह ही चुनौतीपूर्ण होती है कॉमेडी

फुकरे फिल्म में एक्टर पुलकित सम्राट और वरुण शर्मा की केमिस्ट्री ने दर्शकों का खूब मनोरंजन किया था। यह जोड़ी एक बार फिर फिल्म राहु-केतु के जरिए धमाल मचाने आ रही है। फिल्म के रिलीज से पहले वरुण और पुलकित ने बातचीत की। इस दौरान उन्होंने फिल्म के टाइटल से लेकर शूटिंग के अनुभव के बारे में बताया।
एक्टर वरुण शर्मा ने कहा, फिल्म का टाइटल राहु-केतु सिर्फ एक नाम नहीं, बल्कि करियर और दोस्ती के यादगार पल दिलाने वाला प्रतीक है। मैंने और पुलकित ने एक-दूसरे के साथ दस साल से ज्यादा समय बिताया है और यह हमारी पांचवीं फिल्म है। जैसे राहु और केतु हमेशा हमारे जीवन में चलते रहते हैं। वैसे ही हमारी दोस्ती और काम करने का सफर भी बेहद खूबसूरत तरीके से आगे बढ़ रहा है।
फिल्म स्क्रिप्ट को लेकर वरुण ने कहा, राहु-केतु केवल दर्शकों को हंसाने वाली फिल्म नहीं है। इसके साथ ही इसमें एक संदेश भी छिपा है। फिल्म के लेखक और निर्देशक विपुल विग ने कहानी में इस तरह की परतें डाली हैं कि दर्शक फिल्म देखकर हल्का महसूस करेंगे। हंसते-हंसते खुद को और अपने कर्मों को भी समझ पाएंगे। इस फिल्म के जरिए नया साल हंसी और पॉजिटिविटी के साथ शुरू करने का मौका मिलेगा। पुलकित सम्राट ने कॉमेडी को लेकर अपने विचार साझा किए। उन्होंने कहा, कॉमेडी किसी भी अन्य जॉनर की तरह ही चुनौतीपूर्ण होती है। हर सीन में मेहनत लगती है और सही समय पर हंसी लाना बहुत मुश्किल होता है।
वहीं पुलकित ने कहा, वरुण से मैंने बहुत कुछ सीखा है, खासकर टाइमिंग के मामले में। उसके साथ काम करने से मेरी कॉमिक स्किल्स और परफॉर्मेंस में निखार आया है। मुझे कभी वरुण के साथ फिल्मों में काम करना बोरिंग नहीं लगा। लोग हमारी बॉन्डिंग को पसंद करते हैं। हम हर बार नए अंदाज में आते।

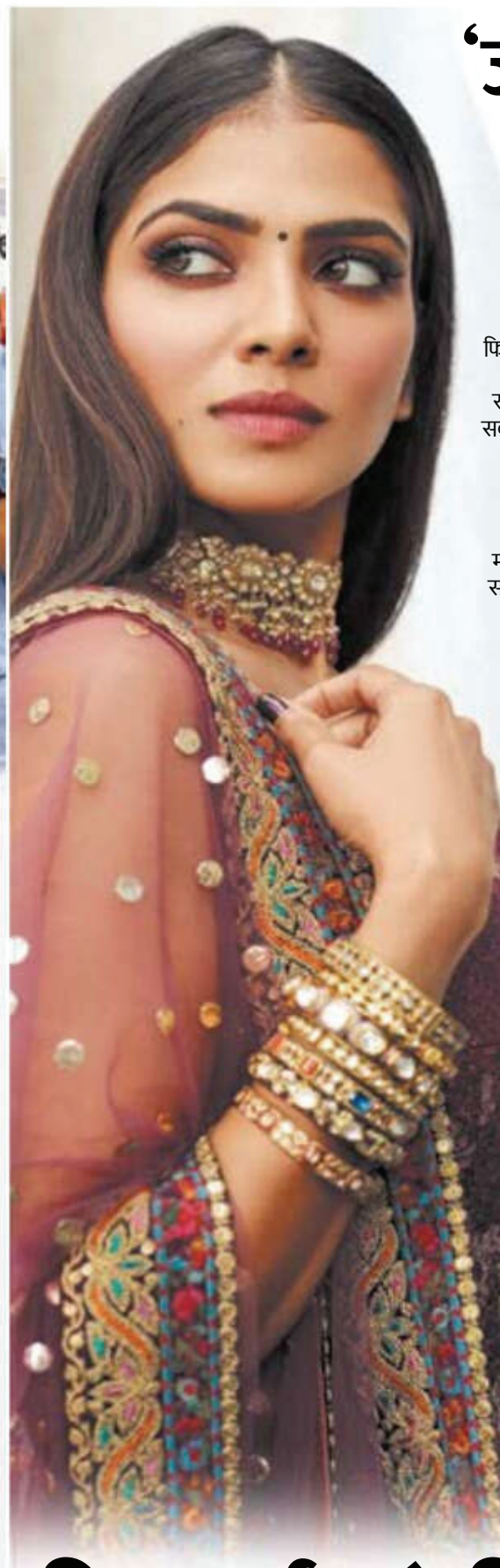

'जन नायकन' के बाद विजय के फिल्मों से दूरी बनाने पर मालविका मोहनन ने जताया दुख

तमिल सुपरस्टार थलापति विजय की आखिरी फिल्म 'जन नायकन' की रिलीज फिलहाल टल गई है। 9 जनवरी को रिलीज होने वाली फिल्म सेंसर सर्टिफिकेट न मिल पाने के कारण रिलीज नहीं हो सकी। फिल्म का मामला अभी भी मद्रास हाईकोर्ट में लंबित है। इस बीच अब विजय व 'जन नायकन' के सपोर्ट में तमिल इंडस्ट्री उतर आई है। इस बीच आज ही रिलीज हुई प्रभास की फिल्म 'द राजा साब' की अभिनेत्री मालविका मोहनन ने थलापति विजय को लेकर बात की है। साथ ही 'जन नायकन' के बाद विजय के फिल्मों से संन्यास लेने पर उन्होंने निराशा जताई है।

विजय की फिल्में बनाती हैं त्योहार जैसा माहौल

इंडिया टुडे के साथ बातचीत के दौरान मालविका मोहनन ने 'जन नायकन' के बाद विजय के सिनेमा से दूरी बनाने पर दुख व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि उनके सभी प्रशंसकों की तरह मुझे भी बड़े पर्दे पर उनकी कमी खलेगी। उनकी हर फिल्म रिलीज होती है, तो ऐसा लगता है जैसे कोई त्योहार हो। उनकी फिल्म रिलीज से पहले पूरे तमिलनाडु के माहौल में जबरदस्त जोश और उत्साह होता है। इसे महसूस करने के लिए आपको वास्तव में चेन्नई, तमिलनाडु में होना पड़ेगा। बहुत कम अभिनेता अपनी फिल्मों की रिलीज के समय ऐसा माहौल बना पाते हैं।

विजय कभी खुद को सुपरस्टार जैसा नहीं समझते

मालविका ने थलापति विजय के साथ 'मास्टर' फिल्म में काम भी किया है। विजय के साथ काम करने के अनुभव को याद करते हुए एक्ट्रेस ने कहा कि 'मास्टर' में उनके साथ काम करने का बहुत अच्छा अनुभव रहा।
आपको ऐसा महसूस नहीं होता कि आप किसी बड़े सुपरस्टार के साथ काम कर रहे हैं। वह बहुत ही प्यारे, विनम्र और एक बेहतरीन इंसान हैं और आपकी बातों को अच्छे से सुनते हैं। वह सचमुच आपके बारे में जानना चाहते हैं। वह सुनते हैं, लोगों को परखते हैं और उनकी समझ बहुत गहरी है।

इस वजह से टली 'जन नायकन' की रिलीज

एच. विनोथ द्वारा निर्देशित जना नायकन राजनीतिक करियर में कदम रखने से पहले विजय की आखिरी फिल्म मानी जा रही है। यह फिल्म 9 जनवरी यानी आज ही रिलीज होनी थी। लेकिन सेंसर से सर्टिफिकेट नहीं मिला। इसके बाद मेकर्स मद्रास हाईकोर्ट गए, लेकिन अब तक वहां भी फिल्म के सेंसर सर्टिफिकेट को लेकर कोई फैसला नहीं आया है। इस वजह से फिल्म की रिलीज फिलहाल टल गई है। मेकर्स ने एक बयान जारी कर इस बारे में बताया कि भारी मन से हम अपने सभी दर्शकों के साथ यह खबर साझा कर रहे हैं। 9 जनवरी को रिलीज होने वाली जन नायकन की रिलीज कुछ अपरिहार्य परिस्थितियों के कारण स्थगित कर दी गई है, जिन पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं है।

'द राजा साब' में नजर आई हैं मालविका मोहनन

मालविका मोहनन प्रभास स्टारर द राजा साब में नजर आई हैं। 'द राजा साब' आज यानी 9 जनवरी को ही सिनेमाघरों में रिलीज हुई है। इस हॉरर-कॉमेडी फिल्म में प्रभास और मालविका के अलावा निधि अग्रवाल, रिद्धि कुमार, संजय दत्त और बोमन ईरानी भी प्रमुख भूमिकाओं में नजर आए हैं।

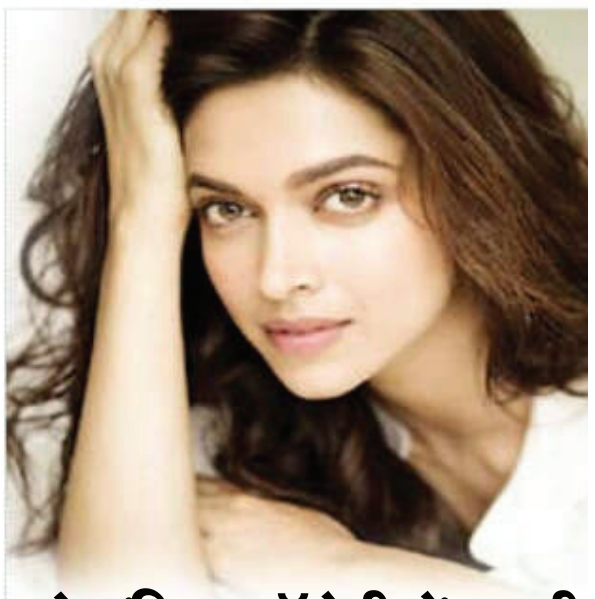

रोमांटिक कॉमेडी में अच्छी कहानियों की तलाश कर रही हैं दीपिका पादुकोण

हाल ही में दीपिका पादुकोण ने मुंबई में अपने फैंस के लिए एक स्पेशल फैन मीट सेशन रखा था। इस दौरान एक्ट्रेस देश भर के 50 फैंस से मिलीं। इस सेशन में फैंस ने दीपिका से खूब सवाल पूछे और उन्होंने सबका जवाब भी दिया। सेशन के दौरान एक्ट्रेस से पूछा गया कि वो कब किसी रोमांटिक कॉमेडी फिल्म में नजर आएंगी? इस पर उन्होंने जवाब दिया- 'मुझे पूरी उम्मीद है कि बहुत जल्द। जैसा कि आप सभी जानते हैं, यह मेरी पसंदीदा जोनर है। एक ऑडियंस के तौर पर भी और एक एक्ट्रेस के तौर पर भी। मुझे लगता है कि अभी के माहौल में दर्शक कुछ अलग देखना चाहते हैं। लेकिन अगर आप में से इतने सारे लोग रोमांटिक कॉमेडी देखना चाहते हैं, तो मुझे यकीन है कि पब्लिक का एक बड़ा हिस्सा यही चाहती है।'
जैसे ही दीपिका ने यह कहा एक फैन ने ऋतिक रोशन का नाम लिया। सेशन के होस्ट ने इस बात पर वहां मौजूद फैंस से एक एक पोल कराया कि रोमांटिक कॉमेडी में दीपिका को किसके साथ काम करना चाहिए... ऋतिक रोशन, शाहरुख खान या उनके पति रणवीर सिंह। फैंस ने शाहरुख और ऋतिक के नाम पर चीयर किया लेकिन सबसे ज्यादा रणवीर सिंह के नाम को समर्थन मिला। बातचीत के दौरान, दीपिका ने शाहरुख खान, रणवीर सिंह या रणबीर कपूर के साथ एक रोमांटिक कॉमेडी फिल्म में स्क्रीन साझा करने की संभावना के बारे में बात की और स्वीकार किया कि वो इस जोनर में अच्छी कहानियों की तलाश कर रही हैं। ऐसी अफवाह चल रही है कि दीपिका अयान मुखर्जी की अगली रोमांटिक फिल्म के लिए रणबीर कपूर के साथ काम कर सकती हैं। हालांकि, इस बारे में अभी तक कोई आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है।
उन्होंने कहा- यह ऐसी चीज है जिसकी तलाश में मैं और मेरी टीम लगी रहती हैं। हम लगातार ड्रामा, लव स्टोरी, रोमांटिक कॉमेडी, जैसे जोनर की फिल्में ढूंढते रहते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि इस तरह के कंटेंट को सपोर्ट करने वाले या इस समय इस तरह की फिल्में और टीवी शो लिखने वाले बहुत कम मेकर्स हैं।' दीपिका ने अपने फैंस से यह भी पूछा कि क्या वे रोमांटिक कॉमेडी फिल्म को ओटीटी पर देखना पसंद करेंगे या थिएटर में। फैंस ने जवाब में थिएटर कहा। फिर दीपिका ने पूछा- अगर मैं ओटीटी पर काम करूं तो क्या आप नाराज होंगे? एक फैन ने जवाब दिया- आप बड़े पर्दे के लिए ही बनी हैं। एक अन्य फैन ने मजाकिया अंदाज़ में कहा- जब तक आपका किरदार नहीं मरता, तब तक सब ठीक है। दीपिका हंसते हुए कहती हैं- मेरी मां भी यही कहती रहती हैं। बता दें कि दीपिका की कई फिल्मों में उनके किरदारों की मौत हो जाती है, जिनमें उनकी पहली फिल्म ओम शांति ओम, गोलियों की रासलीला रामलीला, पद्मावत और जवान शामिल हैं। दीपिका जल्द ही शाहरुख खान की फिल्म किंग में नजर आएंगी। इसके अलावा, वह अल्लू अर्जुन के साथ एटली की फिल्म में काम कर रही हैं।

प्रियदर्शन ने फिल्म धुरंधर की सक्सेस पर खुशी जताई

आदित्य धर की फिल्म धुरंधर ने बॉक्स ऑफिस पर शानदार सफलता हासिल की है। फिल्म ने दुनियाभर में 1200 करोड़ रुपए से ज्यादा की कमाई कर ली है। बुधवार को फिल्ममेकर प्रियदर्शन ने फिल्म की सक्सेस पर खुशी जताते हुए इसके डायरेक्टर आदित्य धर को बधाई दी। बता दें कि आदित्य धर ने अपने करियर के शुरुआती दौर में प्रियदर्शन के साथ काम किया था और उन्हें वो उन्हें अपना गुरु मानते हैं। धर ने प्रियदर्शन की दो फिल्मों आक्रोश (2010) और तेज (2012) के डायलॉग लिखे हैं। प्रियदर्शन ने इंस्टाग्राम पर धर के साथ अपनी एक पुरानी तस्वीर शेयर की। इसके साथ उन्होंने लिखा कि अपने शिष्य को इतनी बड़ी सफलता हासिल करते देखना सबसे बड़ी खुशी होती है। उन्होंने धुरंधर की सफलता के लिए धर को बधाई और धुरंधर 2 के लिए शुभकामनाएं भी दीं। प्रियदर्शन की इस पोस्ट पर धन्यवाद देते हुए धर ने कमेंट सेक्शन में लिखा, मेरे सबसे प्यारे प्रियदर्शन सर... यह मेरे लिए इतना मायने रखता है कि मैं इसे शब्दों में पूरी तरह कह भी नहीं सकता। आपने मुझ पर तब भरोसा किया, जब मैं कुछ भी नहीं था और मेरे पास सिर्फ कंविक्शन और कुछ लिखे हुए पन्ने थे।
उन्होंने आगे लिखा, आपने मुझे बराबरी का दर्जा दिया और सिर्फ काम ही नहीं, बल्कि उससे कहीं ज्यादा कीमती चीजें दीं। सम्मान, भरोसा और अपनापन। एक ऐसी इंडस्ट्री में, जहां मैंने अक्सर यह सीखा कि क्या नहीं करना चाहिए, वहां आपने मुझे साफ तौर पर सिखाया कि क्या करना चाहिए। सिर्फ एक फिल्ममेकर के तौर पर नहीं, बल्कि एक इंसान के तौर पर भी। धर ने यह भी लिखा, आक्रोश और तेज के लिए डायलॉग लिखने से लेकर आज यहां तक पहुंचने तक, हर कदम पर आपकी छाप रही है। मैं हमेशा सबसे पहले आपका ही छात्र रहूंगा। हर चीज के लिए धन्यवाद, सर। यह सफलता जितनी मेरी है, उतनी ही आपकी भी है। फिल्म धुरंधर रिलीज के 35 दिन बाद भी बॉक्स ऑफिस पर अच्छी कमाई कर रही है।

हमारी इंडस्ट्री में आज भी हीरो को पूजा जाता है

राशि खन्ना ने हिंदी फिल्म मद्रास कैफे से एक्टिंग का ककहरा सीखा, फिर जल्द ही तमिल-तेलुगू सिनेमा को भी साध लिया। पैन इंडिया कलाकार बन चुकीं राशि आने वाले दिनों में पवन कल्याण के साथ तेलुगू फिल्म उस्ताद भगत सिंह में नजर आएंगी। यही नहीं, वह तमिल फिल्म राउडी एंड कंपनी और हिंदी फिल्म तलाखों में एक और ब्रिज में भी दिखेंगी। ओटीटी पर भी अजय देवगन के साथ रुद्र- द एज ऑफ डार्कनेस और शाहिद कपूर की फर्जी में उन्होंने अपनी छाप छोड़ी है। बीते साल 2025 में तीन अलग-अलग भाषाओं में वह तीन फिल्मों - 120 बहादुर (हिंदी), तेलुसु कड़ा (तेलुगू) और अगाथिया (तमिल) में अलग-अलग किरदार में पसंद की गई। करियर के इस पड़ाव पर राशि बहुत उत्साहित हैं।

आप दिल्ली में पली-बढ़ी, मुंबई में करियर शुरू किया, अब हैदराबाद में सेटल हैं, तो इन अलग-अलग शहरों ने आपको कैसे गढ़ा?

सच कहूं कि कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं कौन हूं, क्योंकि मैं इतने किरदार निभाती हूं और वो किरदार करते हुए मैं वही बन जाती हूं। फिर वो तमिल हो, तेलुगू हो या हाल ही में मैंने पंजाबी, राजस्थानी, बंगाली किरदार किए तो मेरे मैनेजर बोलते हैं कि आप पैन इंडिया हैं (हंसती हैं)। मैं हैदराबाद में रहती हूं, तो यह शहर अब घर बन चुका है। दिल्ली और मुंबई मैं आती-जाती रहती हूं। मैं फूडी हूं और दिल्ली के खाने का कोई मुकाबला नहीं है। अच्छी बात ये है कि मेरी मम्मी साथ में रहती हैं तो वो दिल्ली वाले छोले भटूरे या कुल्चे छोले घर पर बना देती हैं। फिर भी, वेस्ट दिल्ली में एक ज्वाला हेरी मार्केट थी, जहां हम गोलगप्पे खाने जाते थे, तो वो टिक्की और गोलगप्पे अब भी याद आते हैं। मुंबई की सबसे अच्छी बात वहां की सेफ्टी है। वहां रात के 12 बजे भी ऑटो लेकर कहीं भी जा सकते हैं, घूम सकते हैं। मैं जब मुंबई में रहती थी तो ऑटो में बहुत घूमती थी। अब भी कभी-कभी ऑटो लेकर चली जाती हूं, मगर मेरे मैनेजर मना करते हैं। मुंबई की एक अच्छी बात यह भी है कि यहां सब अपने काम से मतलब रखते हैं।

आपने बॉलीवुड फिल्म मद्रास कैफे से करियर शुरू किया था। फिर साउथ की ओर कैसे मुड़ीं? हिंदी में ही आगे बढ़ने का ख्याल नहीं आया?

असल में, मैं फिल्में देखकर बड़ी नहीं हुई हूं। मेरी सिनेमा में कोई रुचि भी नहीं थी तो जब मैंने मद्रास कैफे की तो ये नहीं सोचा था कि अरे, मैं स्टार बनूंगी या मुझे स्टार बनना है। मुझे बस उस सेट पर काम करना अच्छा लगा तो धीरे-धीरे मैं और काम करती गई। मैंने तो यह भी सोचा था कि मद्रास कैफे के बाद अगर ढंग की फिल्म नहीं मिली तो मैं कुछ और कर लूंगी। लेकिन तभी मुझे मेरी पहली तेलुगू फिल्म मिली, जो बहुत सारे लोगों को अच्छी लगी। फिर मुझे काम मिलता गया और मैं करती गई। मैंने कभी ये सब सोचा ही नहीं कि हिंदी करना है या साउथ में करना है। ये चीजें आपके हाथ में होती भी नहीं हैं। होता वही है जो किस्मत में होता है तो मैं इन चीजों में सरेंडर करना पसंद करती हूं। मुझे जहां अच्छी फिल्में मिलेंगी, मैं करूंगी।

आप बिना किसी फिल्मी कनेक्शन के यहां तक पहुंची हैं। एक आउटसाइडर होने का क्या खामियाजा महसूस हुआ?

यह जरूरी नहीं है कि अगर आप इंडस्ट्री से हैं तो आपको काम मिलता ही रहेगा। हो सकता है कि थोड़े समय तक मिले, पर आगे बढ़ने के लिए आपमें टैलंट होना भी जरूरी है। ये सही है कि हम जैसे बाहर से आए एक्टर्स को थोड़ी ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है, पर मैं मेहनत से कभी नहीं डरी। मुझे पता था कि ये परिस्थितियां हैं, इनका मैं कुछ नहीं कर सकती। मेरे हाथ में सिर्फ मेरी मेहनत है। चाहे कोई फिल्म मुझे मिली या ना मिली, उसकी अलग-अलग वजहें होंगी, लेकिन मैंने खुद को कभी बेचारी या विक्टिम की तरह नहीं देखा। मैंने सिर्फ मेहनत की। रिजेक्शन भी मिला तो मैं समझती हूं कि ये बिजनेस है या उन्हें किसी और को फेवर करना है तो मैं बुरा नहीं मानती। मुझे लगता है कि जो आपकी किस्मत में है वो मिलना ही है। उसे आपसे कोई ले नहीं सकता।

इंडस्ट्री में गैर-बराबरी को लेकर बहुत सी एक्ट्रेसेज ने खुलकर बोला है। आपका इस मामले में क्या अनुभव रहा है?

हमारा समाज ही पितृसत्तात्मक है। इंडस्ट्री में भी हम थोड़ा हीरो वरशिप (हीरो की पूजा) करते हैं। इसलिए, उन्हें ज्यादा इज्जत मिलती है। हालांकि, अब चीजें बदल रही हैं, क्योंकि लड़कियां बोलने लगी हैं। फिर भी अभी पूरी तरह से नहीं बदली है तो निश्चित तौर पर सेट पर ट्रीटमेंट के मामले में एक्टर और एक्ट्रेस के बीच थोड़ा अंतर होता है, क्योंकि प्रोड्यूसर्स का कहना है कि जिसका बॉक्स ऑफिस पुल ज्यादा होगा, जो ज्यादा ऑडियंस लाएगा, उसे ज्यादा इज्जत मिलेगी। हो सकता है कि भविष्य में यह सोच बदले। उसमें वक्त लगेगा लेकिन चीजें बदलेंगी।

झारखंड में सात साल के बच्चे को चोरी के आरोप में पेड़ से बांधकर पीटा

रांची (एजेंसी)। झारखंड के रामगढ़ जिले के पतरातू थाना क्षेत्र में 9 जनवरी को सात साल के एक बच्चे को चोरी के संदेह में पेड़ से बांधकर पीटने का मामला सामने आया। घटना का 20 सेकंड का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद पुलिस ने कार्रवाई की। वीडियो में नाबालिग के हाथ-पैर बंधे दिखाई दे रहे हैं और उसे पीटा जा रहा है। पुलिस ने मुख्य आरोपी बबलू प्रसाद उर्फ टीकाधारी को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा। पुलिस का कहना है कि घटना में शामिल अन्य लोगों की पहचान और गिरफ्तारी के प्रयास जारी हैं। पीड़ित के बड़े भाई की शिकायत के आधार पर भारतीय दंड संहिता और पास्को अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई है। शिकायत में आरोप लगाया गया कि बबलू प्रसाद और दो अन्य लोगों ने बच्चे को रोका और चोरी के आरोप में उस पर हमला किया। यह घटना बच्चों के खिलाफ हिंसा और नाबालिग सुरक्षा की गंभीरता को उजागर करती है।

खटीमा में बाघ के हमले में ग्रामीण की मौत

देहरादून (एजेंसी)। सुरई रेंज के बग्गा 54 क्षेत्र में रविवार की देर रात एक बाघ ने 52 वर्षीय शेर सिंह कन्याल पर हमला कर दिया, जिसमें उनकी मौत हो गई। शेर सिंह चकरपुर लाइन, बग्गा चौहान के निवासी थे। घटना की सूचना मिलने पर उप निरीक्षक लक्ष्मण जोशी और उनका दल मौके पर पहुंचे। पुलिस ने देखा कि शव पर बाघ के नाखून और दांत के निशान थे और दाहिना कुल्हा बाघ द्वारा खाया गया था। घटना से गांव में हड़कंप मच गया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर सुरक्षित मोर्चरी में रखवाया। अधिकारी मामले की तफ्तीश और बाघ की गतिविधियों पर निगरानी कर रहे हैं ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोका जा सके।

कश्यप समाज के युवक की हत्या पर अखिलेश और मायावती ने निंदा कर जताई नाराजगी

लखनऊ(एजेंसी)। समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव और बहुजन समाज पार्टी सुप्रीमो मायावती ने मेरठ के सरधना इलाके में एक युवक की हत्या के मामले पर नाराजगी जताई है। यह घटना करीब एक सप्ताह पहले की है और पुलिस ने बताया कि इस मामले के आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है। अखिलेश यादव ने एक्स पर कहा कि दबंगों ने सरधना क्षेत्र के ज्वालागढ़ में कश्यप समाज के एक युवक की हत्या का जो 'कुकृत्य किया है, उसके लिए हम पूरे पीडीए समाज की तरफ से आवाज उठाते हैं। वहीं बसपा सुप्रीमो मायावती ने भी एक्स पर कहा कि अन्य पिछड़ा वर्ग के अंतर्गत आने वाले कश्यप समुदाय के युवक की हत्या की कड़ी निंदा की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि ऐसे असामाजिक एवं आपराधिक तत्वों को कानून का डर होना जरूरी है। इस बीच अखिलेश यादव और मायावती के पोस्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए मेरठ पुलिस ने कहा कि यह मामला हाल का नहीं है और हत्या की प्राथमिकी दर्ज कर घटना के 24 घंटे के अंदर मामले को सुलझा लिया गया था। उन्होंने बताया कि आरोपी नाबालिग है, जिसे किशोर न्याय बोर्ड के सामने पेश कर बाल सुधार गृह भेज दिया गया है। पुलिस ने बताया कि यह घटना पिछले सोमवार को अक्खेपुर-रार्धना रोड पर हुई थी। मृतक की पहचान मुजफ्फरनगर शहर के मोहल्ला किला निवासी रोहित उर्फ सोनू (28) के रूप में हुई थी। शुरुआती जांच में सामने आया कि टेंपो में तेज आवाज में गाना बजाने को लेकर हुए विवाद के बाद 16 साल के टेंपो चालक ने रोहित की हत्या कर दी थी। सरधना के सीओ ने बताया कि आरोपी ने पहले रोहित से दोस्ती की, फिर उसे शराब पिलाई और खुद 'एनर्जी ड्रिंक' पी और बाद में उसने ईंट से रोहित के सिर पर वार कर उसकी हत्या कर दी। उन्होंने बताया कि पहचान छिपाने के लिए आरोपी ने शव को करीब 15 मीटर तक स्कूल की दीवार के पास एक जगह तक घसीटा और कपड़े, सूखे पत्तों एवं तेल का इस्तेमाल करके उसमें आग लगा दी। घटना की जानकारी तब हुई जब स्कूल के चौकीदार ने सोमवार रात आग जलती देखी और पुलिस को इसकी सूचना दी। अगले दिन शव की पहचान रोहित के रूप में हुई। परिजनों के मुताबिक रोहित मुंबई में हलवाई का काम करता था और शादी के लिए लड़की देखने गांव आया था। पुलिस ने शराब के पाउच पर लगे बारकोड और ठेके के सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आरोपी की पहचान की और हत्याकांड का खुलासा किया।

चारा लेने मां-दादी के साथ जा रही मासूम पर कुत्तों ने नोंच-नोंच कर हाथ कर दिया अलग

संभल (एजेंसी)। यूपी के संभल में आवारा कुत्तों का झुंड मासूम बच्ची पर टूट पड़ा। कुत्तों ने बच्ची को बुरी तरह नोंचकर मार डाला। ये घटना रविवार शाम को तब हुई जब बच्ची अपनी मां के साथ चारा लेने जा रही थी। तभी अचानक आवारा कुत्तों का झुंड उस पर टूट पड़ा। बच्ची की चीख-पुकार सुनकर जब तक घरवाले मौके पर पहुंचे, तब तक कुत्ते उसका एक हाथ काटकर अलग कर चुके थे। गंभीर हालत में बच्ची को जिला अस्पताल ले जाया गया जहां डाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। यह पूरा मामला थाना हजरतनगर गढ़ी क्षेत्र के गांव पोटा का है। जानकारी के मुताबिक पोटा गांव के रहने वाले विनोद उर्फ बंटी की 9 साल की बेटी रिया गौतम प्राथमिक विद्यालय में कक्षा में पढ़ती थी। रिया मां ममता और दादी के साथ बकरी और भैंसों के लिए चारा लेने जा रही थी। मां और दादी थोड़ा आगे निकल गई जबकि रिया पीछे-पीछे आ रही थी। इसी बीच अचानक आवारा कुत्तों के झुंड ने उस पर हमला कर दिया। चीख-पुकार सुनकर बच्ची की मां और दादी दौड़ी और हमलावर कुत्तों को भागने की कोशिश की, लेकिन कुत्ते उसे बुरी तरह नोंच-खसोट करते रहे। आसपास मौजूद और खेतों पर काम कर रहे लोग शोर-शराबा सुनकर वहां पहुंचे और बमुश्किल बच्ची को कुत्तों के चुंगल से बचाया, लेकिन तब तक बच्ची बुरी तरह जख्मी हो चुकी थी। काफी देर तक रिया के कटे हुए हाथ को ढूंढा गया, लेकिन वह नहीं मिला। ग्रामीणों का कहना है कि यहां पिछले कई महीनों से आवारा कुत्तों का आतंक जारी है। अब तक करीब दो दर्जन लोगों को काट चुके हैं। शिकायत के बाद भी कोई सुनवाई नहीं हो रही है। पुलिस का कहना है कि गांव पोटा में एक बच्ची के ऊपर आवारा कुत्तों द्वारा हमला कर दिया था। हमले में बच्ची की मौत हो गई है। पुलिस विधिक कार्रवाई कर रही है।

संगठित पुलिसिंग की झलक : फतेहाबाद पुलिस लाइन में साप्ताहिक परेड आयोजित

एएसपी दिव्यांशी सिंगला, आईपीएस ने परेड का निरीक्षण कर दक्षता, अनुशासन और जनसेवा पर दिया जोर

भीम प्रज्ञा न्यूज़.फतेहाबाद।

रजत विजय रंगा । पुलिस लाइन फतेहाबाद में आयोजित साप्ताहिक पुलिस परेड के दौरान जिले के पुलिस बल की तैयारियों, अनुशासन और कार्यक्षमता का मूल्यांकन किया गया। परेड के माध्यम से पुलिसकर्मियों की शारीरिक दक्षता, एकरूपता और सतर्कता का व्यावहारिक प्रदर्शन देखने को मिला परेड का निरीक्षण सहायक पुलिस अधीक्षक दिव्यांशी सिंगला, आईपीएस द्वारा किया गया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने ड्रिल, टर्नआउट और समन्वय का बारीकी से अवलोकन किया तथा पुलिसकर्मियों को नियमित अभ्यास और अनुशासित दिनचर्या बनाए रखने के निर्देश दिए। निरीक्षण उपरांत एएसपी दिव्यांशी सिंगला ने कहा कि प्रभावी पुलिसिंग की नींव अनुशासन, सजगता और मानसिक मजबूती पर आधारित होती है। उन्होंने बल को अपने कर्तव्यों के निर्वहन में संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाने और आमजन के साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार बनाए रखने का आह्वान किया। परेड के बाद उन्होंने ईआरवी, राइडर तथा पीसीआर यूनिट्स की तैनाती और कार्यप्रणाली की समीक्षा की। इस दौरान आमजन को समय पर सहायता उपलब्ध कराने, रिस्पॉन्स टाइम बेहतर करने और फील्ड में सक्रियता बनाए रखने के निर्देश दिए गए। एएसपी ने पुलिसकर्मियों की व्यक्तिगत एवं पारिवारिक समस्याओं को भी गंभीरता से सुना तथा संबंधित अधिकारियों को समयबद्ध समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि पुलिस बल का मनोबल और कल्याण विभाग की प्राथमिकताओं में शामिल है। कार्यक्रम के समापन पर उन्होंने पुलिसकर्मियों से स्वस्थ जीवनशैली अपनाने, नियमित व्यायाम, योग तथा नशामुक्त दिनचर्या बनाए रखने की अपील की और कहा कि जनता का विश्वास ही पुलिस की सबसे बड़ी ताकत है, जिसे निरंतर कर्मठता से मजबूत किया जाना चाहिए। इस अवसर पर पुलिस अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

साईबर अपराध और नशा मुक्ति को लेकर जिला पुलिस का जागरूकता अभियान तेज

फतेहबाद के गाँव माजरा में आमजन को साइबर सुरक्षा, डिजिटल अरेस्ट और स्वस्थ जीवनशैली की दी जानकारी

भीम प्रज्ञा न्यूज़.फतेहाबाद।

रजत विजय रंगा । पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन, आईपीएस के दिशा-निर्देशन में चलाए जा रहे जन-जागरूकता अभियान के तहत जिला पुलिस द्वारा आमजन को साइबर अपराधों से बचाव, सोशल मीडिया के सुरक्षित उपयोग तथा नशा मुक्ति को लेकर लगातार जागरूक किया जा रहा है। इसी क्रम में थाना साइबर सेल फतेहाबाद में तैनात महिला सहायक उपनिरीक्षक सुनीता के कुशल नेतृत्व में पुलिस टीम द्वारा गाँव माजरा में विशेष जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस कार्यक्रम में आम जनता को साइबर अपराधों की बढ़ती घटनाओं और उनसे बचाव के उपायों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। जागरूकता अभियान के दौरान लोगों को बताया गया कि किस प्रकार फर्जी कॉल, ओटीपी फ्रॉड, सोशल मीडिया हैकिंग, फेक लिंक और ऑनलाइन ठगी के माध्यम से साइबर अपराधी लोगों को निशाना बना रहे हैं।आमजन को यह भी समझाया गया कि किसी भी अनजान कॉल, मैसेज या लिंक पर भरोसा न करें और अपनी निजी जानकारी, बैंक डिटेल या ओटीपी किसी के साथ साझा न करें। इस दौरान डिजिटल अरेस्ट जैसे नए साइबर फ्रॉड तरीकों के बारे में भी विशेष रूप से जागरूक किया गया, जिसमें ठग स्वयं को पुलिस या सरकारी अधिकारी बताकर वीडियो कॉल के माध्यम से डराने-धमकाने की कोशिश करते हैं। लोगों को स्पष्ट किया गया कि इस प्रकार का कोई भी कॉल आने पर घबराने की आवश्यकता नहीं है और तुरंत साइबर हेल्पलाइन या नजदीकी पुलिस थाना से संपर्क करना चाहिए। इसके साथ-साथ पुलिस टीम द्वारा युवाओं और आमजन को नशे से दूर रहने, स्वस्थ जीवनशैली अपनाने और सकारात्मक सामाजिक गतिविधियों से जुड़ने के लिए प्रेरित किया गया। उपस्थित लोगों को बताया गया कि नशा न केवल व्यक्ति के स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाता है, बल्कि परिवार और समाज के लिए भी गंभीर समस्या बनता है। महिला सहायक उपनिरीक्षक सुनीता ने कहा कि साइबर थाना फतेहाबाद आमजन की सुरक्षा के लिए सदैव तत्पर है और किसी भी साइबर अपराध की सूचना तुरंत पुलिस को देने से अपराधियों पर समय रहते कार्रवाई संभव होती है।

राम मंदिर में नमाज पढ़ने की कोशिश करने वाला निकला मानसिक रोगी, पुलिस ने छोड़ा

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या के राम मंदिर में नमाज पढ़ने की कोशिश करने वाला कश्मीरी व्यक्ति मानसिक रोगी निकला। वर्ष 2024 से उसका जम्मू मेडिकल कॉलेज में इलाज चल रहा है। अयोध्या पुलिस व जांच एजेंसियों ने उसकी मेडिकल हिस्ट्री मंगवाई, तो इसकी जानकारी हुई। यही नहीं जम्मू पुलिस, सीआरपीएफ और अन्य खुफिया इकाइयों के माध्यम से उसका सत्यापन भी कराया। इसमें कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला। इसके बाद आरोपी को परिजनों को सौंप दिया गया है।

विदित हो कि राम मंदिर परिसर में उस समय हड़कंप मच गया, जब एक कश्मीरी मुस्लिम व्यक्ति ने रामलला का दर्शन करने के बाद दक्षिणी परकोटे के पास नमाज पढ़ने की कोशिश करने लगा। इस दौरान मौके पर मौजूद सुरक्षा बलों ने उसे दबोच लिया था। उस पर धार्मिक नारे लगाने का आरोप भी लगा था। पूछताछ के दौरान उसकी पहचान अहद शेख निवासी शोपियां, जम्मू कश्मीर के रूप में हुई है। सूचना पर पहुंचे विभिन्न जांच एजेंसियों के अधिकारियों ने उससे पूछताछ की थी। उसके पते का सत्यापन के लिए जम्मू कश्मीर पुलिस और वहां तैनात खुफिया विभाग के अधिकारियों से संपर्क साध कर किया गया था।

गहन जांच के बाद सभी एजेंसियां इस नतीजे पर पहुंची कि आरोपी मानसिक रूप से बीमार था। इस जांच में उसके परिवार वालों ने भी काफी सहयोग किया. उसके बेटे ने अपने पिता की पूरी मेडिकल हिस्ट्री भी जांच अधिकारियों को उपलब्ध कराई। अयोध्या पुलिस ने सीसीटीवी के माध्यम से अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन से राम मंदिर परिसर, गर्भगृह व दक्षिणी परकोटे तक पहुंचने की सभी एक्टिविटी को खंगाला है, जिससे भी कुछ हासिल नहीं हुआ। एसपी सिटी चक्रपाणि त्रिपाठी ने बताया कि परिजनों ने अहद शेख को मानसिक रूप से बीमार बताया गया था। अहद की मेडिकल रिपोर्ट के बाद उसे परिजनों के हवाले कर दिया गया है।

द बौहराज ग्लोबल स्कूल के विद्यार्थियों ने दिखाई युवा शक्ति की झलक,थाना परिसर में गूंजा विवेकानंद का संदेश

भीम प्रज्ञा न्यूज़.महवा।

मनोज खंडेलवाल । स्वामी विवेकानंद जयंती एवं राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर महवा थाना परिसर में आयोजित कार्यक्रम उस समय खास बन गया, जब द बौहराज ग्लोबल स्कूल के विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह और अनुशासन के साथ इसमें सहभागिता कर युवा शक्ति का प्रभावशाली प्रदर्शन किया। थाना परिसर में आयोजित इस आयोजन ने विद्यार्थियों को न केवल स्वामी विवेकानंद के विचारों से जोड़ा, बल्कि उन्हें कर्तव्य, अनुशासन और राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका का जीवंत संदेश भी दिया। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को थाना परिसर का भ्रमण कराया गया, जहां उन्हें पुलिस व्यवस्था, कानून-व्यवस्था और समाज में शांति बनाए रखने में पुलिस की भूमिका के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई, जिससे बच्चों में जागरूकता और जिम्मेदारी का भाव पैदा हुआ। इस अवसर पर विद्यार्थियों को स्वामी विवेकानंद के जीवन परिचय से अवगत कराते हुए बताया गया कि उनकी जयंती को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में इसलिए मनाया जाता है, क्योंकि उन्होंने युवाओं को आत्मविश्वास, साहस और राष्ट्रभक्ति का मार्ग दिखाया। वक्ताओं ने स्वामी विवेकानंद के प्रेरणादायक विचारों, उनके आदर्शों और भारत को विश्वगुरु बनाने के उनके संकल्प पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज का युवा यदि उनके सिद्धांतों को जीवन में उतार ले, तो समाज और देश को नई दिशा मिल सकती है। कार्यक्रम के दौरान युवाओं को यह भी समझाया गया कि शिक्षा, अनुशासन और सेवा भावना के साथ आगे बढ़कर ही वे सशक्त भारत के निर्माण में अपनी भूमिका निभा सकते हैं। कार्यक्रम में विद्यालय के निदेशक विनय बौहरा, सह-निदेशक विकास बौहरा व महवा थानाधिकारी राजेन्द्र कुमार मीना व थाने का स्टॉफ सहित प्रधानाचार्य राजेश, पुनित, उप-प्रधानाचार्य श्वेता नेगी, एकेडमिक इंचार्ज गिरवर यादव, पीटीआई मनोज, सुंदर सहित समस्त विषयाध्यक्ष, शिक्षक एवं शिक्षिकाएं मौजूद रहीं, जिन्होंने विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ाया और उन्हें सकारात्मक मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया।

ऑपरेशन जीवन ज्योति के तहत सीआईए टोहाना की बड़ी कार्रवाई : हेरोइन तस्करी व नशा सेवन में दो आरोपी काबू

रिहायशी मकान के कमरे में नशा बेचते व करते हुए पकड़े गए आरोपी, 6.38 ग्राम हेरोइन बरामद

भीम प्रज्ञा न्यूज़.टोहाना।

रजत विजय रंगा । पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन, आईपीएस के दिशा-निर्देशन में चलाए जा रहे ऑपरेशन जीवन ज्योति के तहत सीआईए टोहाना पुलिस ने नशा तस्करी के खिलाफ कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को काबू करने में सफलता हासिल की है। दोनों आरोपियों को माननीय न्यायालय में पेश किया जाएगा। सीआईए टोहाना प्रभारी उपनिरीक्षक अशोक कुमार ने बताया कि दिनांक 11 जनवरी 2026 को गुप्त सूचना के आधार पर सीआईए टोहाना की टीम ने वार्ड नंबर-19, टोहाना स्थित एक रिहायशी मकान के कमरे में रेड की। मौके पर दो युवक नशा करते पाए गए, जिनके पास से नशा सेवन में प्रयुक्त सामग्री बरामद हुई। आरोपी की पहचान नवी सिंह उर्फ मुर्गा पुत्र दिलबाग सिंह, निवासी वार्ड नंबर-19 शक्ति नगर, टोहाना तथा प्रवेश उर्फ कन्हैया पुत्र राभगत, निवासी वार्ड नंबर-19, काली माता मंदिर के नजदीक, टोहाना के रूप में हुई। तलाशी के दौरान आरोपी नवी सिंह उर्फ मुर्गा के कब्जे से 6.38 ग्राम हेरोइन (चिट्टा) बरामद की गई, जबकि दोनों आरोपियों के पास से नशा सेवन में प्रयुक्त सामग्री भी मिली। बरामद हेरोइन व नशा सेवन से संबंधित सामग्री को नियमानुसार कब्जा पुलिस में लिया गया। इस संबंध में आरोपियों के खिलाफ अभियोग संख्या 21 दिनांक 11.01.2026, एनडीपीएस एक्ट की धारा 21-B, 25 व 27 के तहत मामला दर्ज किया गया है। मामले की जांच जारी है तथा नशा तस्करी से जुड़े अन्य पहलुओं की गहनता से जांच की जा रही है।

अन्नामलाई की राज ठाकरे को सीधी चुनौती... मैं मुंबई जरूर जाऊंगा, हिम्मत है तो पैर काटकर दिखाएं

मुंबई (एजेंसी)। तमिलनाडु के युवा बीजेपी नेता के. अन्नामलाई ने महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (एमएनएस) प्रमुख राज ठाकरे द्वारा उन्हें दी गई धमकियों का करारा जवाब देकर कहा है कि वे मुंबई जरूर आएंगे और हिम्मत है, तब उनके पैर काटकर दिखाएं। सोमवार को चेन्नई में मीडिया से बात कर अन्नामलाई ने सवाल किया कि उन्हें धमकाने वाले आदित्य या राज ठाकरे कौन होते हैं। उन्होंने गर्व से खुद को एक किसान का बेटा बताकर कहा कि वे ऐसी धमकियों से डरने वाले नहीं हैं।

दरअसल राज ठाकरे ने हाल ही में अन्नामलाई पर रसमलाई वाला तंज कसा था, जिसके बाद कुछ एमएनएस समर्थकों ने अन्नामलाई के मुंबई आने पर उनके पैर काटने की धमकी दी थी। बीजेपी नेता अन्नामलाई ने इन धमकियों को अज्ञानता करार देकर कहा कि अगर वे डरते, तब अपने गांव में ही रहते। उन्होंने कहा कि मुंबई एक ग्लोबल लेवल का शहर है और उनके बयानों का गलत मतलब निकाला जा रहा है।

विवाद केवल अन्नामलाई तक सीमित नहीं रहा। मनसे प्रमुख राज ठाकरे ने नक्शा दिखाकर आरोप लगाया कि पिछले 10 साल में केवल कारोबारी गौतम अडानी ही अमीर हुए हैं। इस पर मुंबई बीजेपी प्रमुख अमित साटम ने पलटवार कर राज और अडानी की एक पुरानी फोटो साझा की। बीजेपी नेता साटम ने फोटो को पोस्ट करते हुए राज ठाकरे के रुख को शर्म और पाखंड की पराकाष्ठा करार दिया। बीजेपी का तर्क है कि एक ओर राज ठाकरे अडानी से मिलते हैं और दूसरी तरफ उन पर आरोप लगा रहे हैं।

बीजेपी नेता के. अन्नामलाई ने राज और उनके समर्थकों के बयानों को पूरी तरह अज्ञानता से भरा बताया। उन्होंने तर्क दिया कि अगर वे कामराज को भारत का महान नेता कहते हैं, तब इसका मतलब यह नहीं कि वे तमिल नहीं रहे। इसी तरह, मुंबई को विश्व स्तरीय शहर बताने का मतलब यह नहीं है कि वे मराठियों के योगदान को नकार रहे हैं।

हिमाचल के बाजार में लगी भीषण आग, बच्चे समेत दो की मौत, 8 लापता, तलाश जारी

-सिलेंडर फटने से दमकल कर्मियों को आग बुझाने मुश्किलों का करना पड़ा सामना

सोलन (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश के सोलन जिले में कई सिलेंडर फटने से अर्की के निचले बाजार में भीषण आग लगी। अब तक बच्चे समेत दो लोगों की मौत हो गई है, जबकि 8 लोग लापता बताए जा रहे हैं। इनमें चार बच्चे हैं। आग से सात साल के बच्चे को जिंदा निकाला, लेकिन उसकी अस्पताल में मौत हो गई। राहत और बचाव कार्य जारी है।

जानकारी के मुताबिक अर्की के निचले मेन बाजार में बीती रात को आग लग गई। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप ले लिया और एक के बाद एक कई दुकानें धू-धू कर जल गईं। आगजनी के बीच कई सिलेंडर भी फटे और बाजार में अफरा-तफरी मच गई। लोगों ने तुरंत प्रशासन और दमकल विभाग को सूचना दी। सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड की कई गाड़ियां मौके पर पहुंचीं और आग पर काबू पाने की जद्दोजहद की, लेकिन लगातार हो रहे ब्लास्ट के चलते दमकल कर्मियों को मुश्किलों का सामना करना पड़ा। इस अग्निकांड में करोड़ों रुपए की संपत्ति के नुकसान की आशंका जताई जा रही है।

जानकारी के मुताबिक जेसीबी मशीनों के जरिये अब मलबे में लापता आठ लोगों की तलाश की जा रही है। दोपहर एक बजे के करीद दूसरी डेडबॉडी मिली है। इससे पहले सुबह एक बच्चे की मौत हो गई थी जिसे आग से जिंदा बचाया गया था। डीसी सोलन ने बताया कि सोमवार अल सुबह 2 बजकर 45 मिनट पर अर्की बाज़ार के एक पुराने भवन में आग लग गई। उन्होंने कहा कि यह पुराना भवन लकड़ी का बना था और इस कारण आग बहुत तेज़ी से फैली। हालांकि आग पर काबू पा लिया गया है। डीसी ने बताया कि इस अग्निकांड में एक 8 साल के बच्चे प्रियांश की दुःखद मृत्यु हुई है। उन्होंने कहा कि मृतक के परिजनों को फौरी सहायता उपलब्ध करवाई गई है और अग्निकांड के जांच के आदेश दिए गए हैं। डीसी ने बताया कि अग्निकांड में दो लोग घायल हुए हैं। इनका उपचार अस्पताल में किया जा रहा है। अतिरिक्त उपायुक्त और प्रशासन एवं पुलिस की टीम घटना स्थल पर मौजूद हैं। यह दल पीड़ितों को वस्त्र एवं अन्य सहायता उपलब्ध करवाएगा। सीएम सुक्खू ने बताया कि आठ साल की बच्ची की मौत हुई है और कुछ लोगों के फंसने की सूचना है। स्थानीय विधायक संजय अवस्थी से उनकी फोन पर बात हुई है और वह मौके पर मौजूद हैं और फंसे हुए लोगों को निकालने की कोशिश की जा रही हैं और एसडीआरफ की टीम पहुंची हैं। सीएम ने कहा कि आग लगने के कारणों पर कहा कि अब तक यह पता नहीं चला है।

कड़ाके की ठंड: राजस्थान और कश्मीर में पारा शून्य से नीचे, दिल्ली में 13 साल का रिकॉर्ड टूटा

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तर भारत के विशाल हिस्से में भीषण ठंड और शीतलहर का कहर लगातार जारी है। बर्फीली हवाओं और गिरते पारे ने जनजीवन को बुरी तरह प्रभावित किया है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार, अगले कुछ दिनों तक कड़ाके की ठंड से राहत मिलने की उम्मीद नहीं है और कई राज्यों में येलो अलर्ट जारी कर दिया गया है।

इस सीजन में पहली बार देश की राजधानी दिल्ली में तापमान में भारी गिरावट दर्ज की गई। दिल्ली के आयानगर में न्यूनतम तापमान 2.9 डिग्री सेल्सियस तक गिर गया, जबकि पालम वेधशाला में तापमान 3.0 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। पालम में पिछले 13 वर्षों में दर्ज किया गया यह सबसे कम तापमान है। मौसम विभाग ने चेतावनी दी है कि अगले दो दिनों तक दिल्ली और आसपास के इलाकों में इसी तरह की भीषण शीतलहर बनी रहेगी। राजस्थान के कई हिस्सों में हालात और भी गंभीर हैं। मरुस्थलीय राज्य होने के बावजूद यहां के कुछ इलाकों में तापमान जमाव बिंदु से नीचे चला गया है। प्रतापगढ़ में न्यूनतम तापमान शून्य से 2 डिग्री सेल्सियस नीचे रिकॉर्ड किया गया, वहीं बाड़मेर में भी पारा शून्य से 1 डिग्री सेल्सियस नीचे रहा। भीषण शीतलहर के कारण सुबह के समय खेतों में बर्फ की चादर देखी जा रही है, जिससे आम जनजीवन के साथ-साथ खेती पर भी असर पड़ने की आशंका है।

पहाड़ी राज्यों की बात करें तो हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और जम्मू-कश्मीर में कड़ाके की ठंड पड़ रही है। कश्मीर घाटी वर्तमान में चिल्ला-ए-कलां के दौर से गुजर रही है, जो 40 दिनों की सबसे कठिन सर्दियों की अवधि होती है। इस दौरान घाटी में न्यूनतम तापमान अक्सर जमाव बिंदु से कई डिग्री नीचे रहता है। श्रीनगर में शनिवार रात तापमान शून्य से 5.2 डिग्री सेल्सियस नीचे दर्ज किया गया। अत्यधिक ठंड के कारण विश्व प्रसिद्ध डल झील और अन्य जल निकायों के किनारे जमने शुरू हो गए हैं। हालांकि, इस साल अब तक घाटी के मैदानी इलाकों में बर्फबारी नहीं हुई है, लेकिन आसमान साफ रहने और शुष्क मौसम के कारण रात की ठंड और अधिक बढ़ गई है। पंजाब और हरियाणा में भी स्थिति सामान्य नहीं है, यहाँ अधिकांश शहरों में तापमान जमाव बिंदु के करीब बना हुआ है। मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि 21 जनवरी तक मौसम मुख्य रूप से शुष्क रहेगा, लेकिन आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। सरकार और प्रशासन ने लोगों को ठंड से बचने के लिए सतर्क रहने की सलाह दी है, खासकर बुजुर्गों और बच्चों के लिए विशेष सावधानी बरतने को कहा गया है। फिलहाल उत्तर भारत के मैदानी इलाकों से लेकर पहाड़ों तक, लोग अलाव और गर्म कपड़ों के सहारे इस हाड़ कंपाने वाली ठंड का सामना कर रहे हैं।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक स्वामी मुद्रक एवं संपादक हरेश पंवार द्वारा शीतल प्रिंटिंग ऑफसेट, प्लॉट नंबर 245 , बुहाना रोड़ पचेरी बड़ी, जिला झुंझुनूं ,राजस्थान-333515 से मुद्रित एवं प्रकाशित,
मुद्रक मीना, संपादक हरेश पंवार, भीम प्रज्ञा मीडिया हाउस, बुहाना रोड़ पचेरी बड़ी, जिला झुंझुनूं ,राजस्थान-333515 मो. 9983040937, –mail bheempragya@gmail.com